राजभाषा अनुराग

अंक 9
वार्षिक पत्रिका 2024-2025

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), गुरुग्राम

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा नराकास गुरूग्राम के कुछ सदस्य कार्यालयों के साथ विचार-विमर्श कार्यक्रम की झलकियां

राजभाषा अनुराग

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), गुरूग्राम
की वार्षिक पत्रिका वर्ष 2024-2025

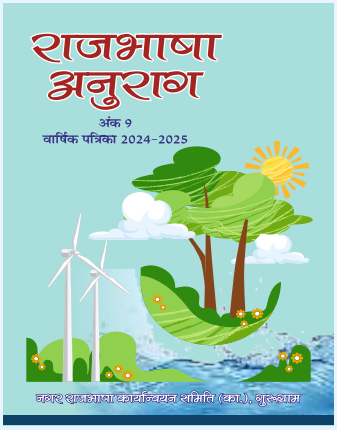

संरक्षक
शिल्पा सचिन शिंदे
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस एवं
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.)
गुरूग्राम

सह-संरक्षक
अमिताभ त्रिपाठी
निदेशक (वाणि. व मा.सं.वि.) एवं
अध्यक्ष, विराकास, वाप्कोस

संपादक मण्डल
राघवेन्द्र कुमार
प्रमुख (रा.भा.का.) एवं सदस्य सचिव,
नराकास गुरूग्राम
आशीष त्यागी
उप मुख्य प्रबन्धक (रा.भा.का.)
गौरव राघव
वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक

सहयोग
शारदा रानी
वरिष्ठ सहायक

डिजाइन एवं मुद्रण
कृष्णा गुप्ता

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), गुरुग्राम
अध्यक्षीय कार्यालय : वाप्कोस लिमिटेड
76 - सी इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर - 18, गुरुग्राम - 122 015 (हरियाणा)
दूरभाष : 0124-2340548 ; फैक्स : 0124-2397392
ई-मेल : hindi@wapcos.co.in

टिप्पणी: पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के निजी विचार है और यह आवश्यक नहीं है कि संपादक मण्डल/प्रकाशक इनसे सहमत हों। रचना की मौलिकता तथा अन्य किसी विवाद के लिए लेखक अथवा संबंधित कार्यालय स्वयं उत्तरदायी होंगे।

इस अंक में	पृष्ठ संख्या
संदेश	01
सम्पादकीय	02
खेल भावना से कार्यक्षेत्र तक: जीत की असली परिभाषा	03-05
कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भारत	06-09
संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा नराकास गुरुग्राम के कुछ सदस्य कार्यालयों के साथ विचार-विमर्श कार्यक्रम	11
पावरग्रिड की राजभाषा सम्बन्धी गतिविधियां	12-16
'' आईपीएफटी: नवाचार से संरक्षण की ओर''	19-20
उप क्षेत्रीय कार्यालय गुरुग्राम क.रा.बी. निगम में हिंदी कार्यशाला सह संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण	21-23
राइट्स लिमिटेड, निगमित कार्यालय-राजभाषा गतिविधियां	26-30
राष्ट्रीय सौर ऊर्जा संस्थान-हिन्दी कार्यशाला का आयोजन	31-32
भाषा और हम	35-38
नैमिषारण्य की शाम का अहसास	39-41
वाप्कोस गुरुग्राम कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन	43-45
एन पी सी सी केंद्रीय कार्यालय की गतिविधियां	47-52
समय प्रबंधन	54-56
''ए आई का उदय और वैश्विक सुरक्षा पर इसका प्रभाव''	59-60
मधुबनी कला-एक पारंपरिक लोकचित्र शैली	61

कविताएं

- ''आज मेरी बारी है''
- माँ वो मेरी माँ
- धरती माता पर प्रहार
- ''किसान''
- सेकंड इनिंग
- शुल्लक
- जीवन में नारी का संतुलन
- गज़ल
- कठोरतम संदेश यही है
- सुविचार
- रेल की खिड़की
- पूछ रहे है सवाल: क्रांतिकारी

राजभाषा नियम/The Official Language Rule, 1976

राजभाषा नियम-2 में केन्द्रीय सरकार के कार्यालय, हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान, हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त आदि की परिभाषाएं दी गई हैं तथा राजभाषा कार्यान्वयन को ध्यान में रखते हुए राज्यों तथा संघ शासित प्रदेशों को निम्नानुसार तीन क्षेत्रों में बांटा गया है/In Official Language Rule-2 definitions of Central Government Offices, Working knowledge of Hindi, Proficiency in Hindi are given and taking in view of Official Language Implementation States and Union Territories are divided in the following three regions

"क" क्षेत्र – बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तराखण्ड, झारखंड, दिल्ली एवं अंडमान निकोबार द्वीप समूह।

"Region A" - means the States of Bihar, Haryana, Himachal Pradesh, Madhya Pradesh, Rajasthan, Uttar Pradesh, Chattisgarh, Uttarakhand, Jharkhand, Delhi and Andaman and Nicobar Islands;

"ख" क्षेत्र – गुजरात, महाराष्ट्र, पंजाब, चंडीगढ़, दादरा एवं नगर हवेली दमन दीव।

"Region B" - means the States of Gujarat, Maharashtra, Punjab, Chandigarh, Dadra and Nagar Haveli Damn Div.

"ग" क्षेत्र – आंध्र प्रदेश, अरूणाचल प्रदेश, असम, तमिलनाडु, मणिपुर, मिजोरम, गोवा, कर्नाटक, जम्मू कश्मीर, केरल, नागालैंड, उडीसा, सिक्किम, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, लक्ष्यद्वीप, पुडुचेरी, तेलंगाना।

"Region C" means the States of Andhra Pradesh, Arunachal Pradesh, Assam, Tamilnadu, Manipur, Mizoram, Goa, Karnataka, J&K, Kerala, Nagaland, Orissa, Sikkim, Tripura, West Bengal, Lakshyadeep, Puducherry, Telengana.

संदेश

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), गुरूग्राम की वार्षिक पत्रिका 'राजभाषा अनुराग' के अंक 9 के माध्यम से अपने विचार आपके सम्मुख रखते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। संचार माध्यमों के साथ आज हिंदी भाषा बड़ी तेजी से सरलीकरण की तरफ बढ़ रही है। हमें हिंदी में कार्य करने के लिए सरल शब्दों अर्थात आम बोलचाल के शब्दों के प्रयोग पर विशेष ध्यान देते हुए इसे अपने हृदय एवं मन की भाषा बनाना होगा तभी हिंदी का प्रचार-प्रसार हो सकेगा। नये-नये तकनीकी साधनों की उपलब्धता ने इस कार्य को अधिक सरल बना दिया है।

आप सभी को विदित है कि नगर राजभाषा कार्यान्व यन समितियों का गठन राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु किया गया है। अधिकांश सदस्य कार्यालय अपने यहां अपनी गृह पत्रिकाएं प्रकाशित करते हैं परन्तु यह पत्रिका सम्पूर्ण नराकास, गुरूग्राम का प्रतिनिधित्व करती है।

इस पत्रिका में हमने वर्ष 2024-25 में नराकास गुरूग्राम के सदस्यों द्वारा वर्ष के दौरान, राजभाषा के क्षेत्र में की गई विभिन्न गतिविधियों, प्रतियोगिताओं, सदस्य कार्यालयों द्वारा भेजे गए लेखों, कविताओं तथा सम्बद्ध सामग्री को शामिल किया है।

नराकास (का.), गुरूग्राम के सभी सदस्य कार्यालयों को नराकास समिति के सफल कार्य- निष्पादन में महत्वपूर्ण सहयोग देने के लिए मैं आप सभी का धन्यवाद करती हूं तथा यह भी आशा करती हूं कि हम सभी के सामूहिक एवं सकारात्मक प्रयासों से हमारी नराकास को देश की शीर्ष नराकासों में शामिल कराने में हमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

सभी पाठकों एवं राजभाषा प्रहरियों को मेरी ओर से आगामी नवर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं।

शिल्पा

(शिल्पा सचिन शिंदे)
अध्यक्ष, नराकास (का.), गुरूग्राम एवं
अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक, वाप्कोस लिमिटेड

सम्पादकीय

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), गुरूग्राम के सदस्य कार्यालयों के सहयोग से नराकास गुरूग्राम की वार्षिक पत्रिका 'राजभाषा अनुराग' का प्रकाशन नियमित रूप से किया जा रहा है।

हिन्दी भाषा में समय के अनुरूप ढल जाने की अपार क्षमता है। हिन्दी नदी की उस अविरल धारा के समान है जिसने समय के साथ अपने आप में सभी को समाहित करते हुए निरंतर रूप से अपने प्रवाह को बनाए रखा है। आज हमारे पास हिंदी के तरह-तरह के साफ्टवेयर उपलब्ध है। तकनीक के इस युग में कंप्यूटर पर प्रत्येक वह कार्य हिंदी में किया जा सकता है जिसे अंग्रेजी में करना संभव है। ऐसे में हमें केवल आत्मविश्वास व लगन के साथ कदम बढ़ाने की आवश्यकता है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों ने भारत में स्थित सभी सरकारी कार्यालयों और उपक्रमों को एक सूत्र में पिरोने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। जिसके परिणामस्वरूप नराकास आपसी संवाद और सम्पर्क से, भारत सरकार की विभिन्न नीतियों, सूचनाओं एवं गतिविधियों की जानकारी को एक-दूसरे तक पहुंचाने एवं उनके सफल कार्यान्वयन का एक सशक्त माध्यम बन गई हैं।

'राजभाषा अनुराग' को और अधिक ज्ञानवर्धक, उपयोगी तथा रोचक बनाने के लिए आपकी प्रतिक्रियाओं व सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी।

नव वर्ष की हार्दिक शुभकानाओं के साथ, राजभाषा अनुराग का यह अंक आपके सम्मुख रखता हूं।

(राघवेन्द्र कुमार)
सदस्य सचिव, नराकास गुरूग्राम

खेल भावना से कार्यक्षेत्र तक: जीत की असली परिभाषा

"जीत हमेशा उसी की होती है, जो गिरने के बाद भी उठकर दौड़ना जानता है।"

जीवन में खेलों का स्थान केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है। खेल हमें ऐसे जीवन-पाठ सिखाते हैं जो हमारे काम और करियर दोनों को नई दिशा दे सकते हैं। अनुशासन, समय प्रबंधन, टीमवर्क, नेतृत्व, धैर्य और खेल भावना—ये सभी गुण खेलों से ही उपजे हैं। जब हम इन गुणों को अपने कार्यस्थल पर लागू करते हैं, तो न केवल हमारी कार्यक्षमता बढ़ती है बल्कि हम एक बेहतर इंसान और बेहतर पेशेवर भी बनते हैं।

अनुशासन और समय प्रबंधन

खेल हमें सबसे पहले अनुशासन का महत्व सिखाते हैं। कोई भी खिलाड़ी केवल प्रतिभा के दम पर सफल नहीं हो सकता। उसे समय पर उठना, नियमित अभ्यास करना, फिटनेस पर ध्यान देना और अपने कोच या प्रशिक्षक की बात माननी पड़ती है। यही निरंतरता और अनुशासन उसे विजय दिलाते हैं।

ऑफिस में भी अनुशासन का वही महत्व है। यदि हम समय पर दफ्तर पहुँचें, तय समय सीमा में कार्य पूरा करें और छोटी-छोटी समय प्रबंधन की आदतें अपनाएँ, तो हमारी छवि एक भरोसेमंद और सक्षम कर्मचारी की बनती है। अनुशासन हमें यह सिखाता है कि निरंतर प्रयास ही असली सफलता की कुंजी है।

टीमवर्क की ताकत

"एक अच्छा खिलाड़ी मैच जीत सकता है, लेकिन एक अच्छी टीम चैंपियनशिप जीतती है।"

खेलों की दुनिया हमें टीमवर्क का असली अर्थ समझाती है। क्रिकेट में बल्लेबाज़ शतक लगाकर भी तभी विजेता कहलाता है जब टीम मैच जीतती है। फुटबॉल में गोलकीपर का बचाव और स्ट्राइकर का गोल – दोनों मिलकर ही टीम को सफलता दिलाते हैं।

कार्यस्थल पर भी यही स्थिति है। कोई भी प्रोजेक्ट केवल एक व्यक्ति के प्रयास से पूरा नहीं होता। हर विभाग, हर कर्मचारी अपनी भूमिका निभाता है। जब हम सहयोग की भावना से काम करते हैं, एक-दूसरे की ताकत और कमजोरी को समझते हैं, तभी संगठन की सफलता सुनिश्चित होती है।

हार से सीखना और वापसी करना

खेलों की सबसे बड़ी विशेषता है कि यहाँ हार-जीत का सिलसिला चलता रहता है। हर खिलाड़ी जानता है कि हार किसी भी दिन किसी भी व्यक्ति के हिस्से में आ सकती है। लेकिन सच्चा खिलाड़ी वही है जो हार से निराश न होकर उसमें सुधार के अवसर खोजे और अगली बार और मजबूत होकर मैदान में उतरे।

ऑफिस में भी हमें असफलताओं का सामना करना पड़ता है। कभी प्रोजेक्ट पास नहीं होता, कभी टेंडर रद्द हो जाता है, तो कभी मेहनत का तुरंत फल नहीं मिलता। ऐसे समय में खेलों से मिली सीख बहुत काम आती है—हार को असफलता न मानकर उसे अनुभव मानना और नई ऊर्जा के साथ वापसी करना। यही दृष्टिकोण हमें दीर्घकालिक सफलता दिलाता है।

रणनीति और निर्णय क्षमता

खेल केवल शारीरिक मेहनत का नाम नहीं है, इसमें रणनीति और समय पर लिया गया निर्णय भी उतना ही महत्वपूर्ण है। क्रिकेट का कप्तान कब गेंदबाज़ बदले, कब बल्लेबाज़ को पारी में भेजे, या कब आक्रामक रुख अपनाए—ये सब फैसले मैच का रुख पलट सकते हैं।

कार्यालय में भी यही बात लागू होती है। प्रोजेक्ट की योजना बनाते समय या किसी मुश्किल परिस्थिति में सही निर्णय लेना ही सफलता और असफलता के बीच का अंतर तय करता है। खेल हमें सिखाते हैं कि सोच-समझकर बनाई गई रणनीति और दबाव की घड़ी में लिया गया साहसी निर्णय ही हमें आगे बढ़ाता है।

नेतृत्व और प्रेरणा

खेल में कप्तान केवल आदेश देने वाला नहीं होता, बल्कि पूरी टीम का मनोबल ऊँचा रखने वाला होता है। वह जीत का श्रेय टीम को देता है और हार की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेता है। उसकी सकारात्मक सोच और प्रेरणा पूरी टीम को बेहतर प्रदर्शन करने के लिए उत्साहित करती है।

ऑफिस में भी नेतृत्व का यही महत्व है। एक अच्छा लीडर केवल काम बाँटता नहीं, बल्कि अपनी टीम का मार्गदर्शन करता है, उनका आत्मविश्वास बढ़ाता है और कठिन समय में उनका सहारा बनता है। जब टीम अपने नेता पर भरोसा करती है, तब संगठन नई ऊँचाइयों तक पहुँचता है।

स्वस्थ प्रतिस्पर्धा

खेलों में प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ी मैदान पर एक-दूसरे को हराने की पूरी कोशिश करते हैं, लेकिन मैच के बाद खेल भावना से हाथ मिलाना नहीं भूलते। यह हमें स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का असली अर्थ समझाता है।

ऑफिस में भी सहकर्मियों के बीच प्रतिस्पर्धा स्वाभाविक है, लेकिन इसे ईर्ष्या या कटुता में बदलने के बजाय प्रेरणा के रूप में लेना चाहिए। स्वस्थ प्रतिस्पर्धा हमें बेहतर करने की प्रेरणा देती है और संगठन में सकारात्मक ऊर्जा बनाए रखती है।

धैर्य और निरंतरता

खिलाड़ी का करियर केवल एक या दो दिन में नहीं बनता। उसे वर्षों तक अभ्यास करना पड़ता है, अनगिनत बार हार का सामना करना पड़ता है, और निरंतर मेहनत करनी पड़ती है। यही निरंतरता एक दिन उसे विजेता बनाती है।

ऑफिस में भी यही सीख लागू होती है। किसी बड़ी उपलब्धि के लिए हमें धैर्य और सतत प्रयास करना होता है। चुनौतियाँ आएँगी, रुकावटें आएँगी, लेकिन जो लगातार प्रयास करता है वही अंततः सफलता पाता है।

मानसिक मजबूती और तनाव प्रबंधन

खेल हमें मानसिक दृढ़ता का एक महत्वपूर्ण पाठ भी देते हैं। अंतिम ओवर में गेंदबाज़ पर जितना दबाव होता है, उतना ही बल्लेबाज़ पर भी होता है। ऐसे समय में वही खिलाड़ी विजयी होता है जो शांत मन से संतुलन बनाए रख सके।

ऑफिस में भी हम अक्सर तनावपूर्ण स्थितियों का सामना करते हैं—कठिन समयसीमाएँ, आकस्मिक समस्याएँ या ग्राहकों की दबावपूर्ण अपेक्षाएँ। ऐसे क्षणों में खेलों से मिली मानसिक मजबूती काम आती है, हमें शांत रहकर सही निर्णय लेने की शक्ति देती है और तनाव को नियंत्रित करने में मदद करती है।

उदाहरण स्वरूप, एशिया कप 2025 के फाइनल मैच में तिलक वर्मा ने कम ही समय में बनती चुनौतियों के बीच संयम बनाए रखा और 69 रन की नाबाद, दबावपूर्ण पारी खेलकर भारत को जीत दिलाई। जब मुकाबला बेहद नज़दीक था और विपक्षी टीम लगातार दबाव बना रही थी, तब तिलक वर्मा की वह पारी यह दिखाती है कि अंदरूनी आत्मविश्वास, मन का स्थिर होना और स्थिति को समझने की मानसिक तैयारी कैसे निर्णायक भूमिका निभा सकती है। यही गुण किसी परियोजना की डेडलाइन, संकट या प्रबंधन दबाव की घड़ी में भी काम आने वाला दृष्टिकोण बन जाते हैं।

निष्कर्ष

खेल केवल समय बिताने का साधन नहीं, बल्कि जीवन की पाठशाला हैं। मैदान पर सीखी गई बातें—अनुशासन, टीमवर्क, नेतृत्व, रणनीति, धैर्य और खेल भावना—ये सब हमारे कार्यस्थल को अधिक सकारात्मक और उत्पादक बनाते हैं।

यदि हम इन गुणों को अपने काम में शामिल करें तो न केवल हम व्यक्तिगत रूप से सफल होंगे, बल्कि हमारा संगठन भी नई ऊँचाइयाँ छू सकेगा। खेल हमें यह याद दिलाते हैं कि जीत का असली आनंद केवल ट्रॉफी पाने में नहीं, बल्कि उस सफ़र में है जिसमें मेहनत, संघर्ष, हार, वापसी और आत्मविश्वास शामिल होता है।

-शिव दयाल
प्रबंधक
राइट्स लिमिटेड, शिखर, गुरुग्राम

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भारत

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) जिसे हम हिंदी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता कहते हैं, जिससे स्वत: ही स्पष्ट हो रहा है कि ऐसी बुद्धि जो कृत्रिम है और इंसान द्वारा बनाई गई है। इस बुद्धि के निर्माण में इंसान की भूमिका है, भगवान की नहीं। यहाँ इंसान ही ब्रह्मा बनकर एक ऐसी सृष्टि की रचना करना चाहता है जो उसी के इशारे पर चले। आज का इंसान आधुनिक तकनीकों के माध्यम से मशीनी इंसान (यानि रोबोट/मशीनें) तैयार कर भगवान को चुनौती देते हुए दिखाई दे रहा है। ब्रह्मा जी की रचना (इंसान) के मस्तिष्क से उत्पन्न ए.आई. तीनों लोकों पर विजय प्राप्त करेगा या भस्मासुर बन कलयुग के अंत की नींव रखेगा, यह सवाल भविष्य के गर्भ में पुष्पित हो रहा है।

भारतीय सभ्यता और संस्कृति इस पृथ्वीलोक पर सबसे प्राचीन है। भारतीय सभ्यता सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग के कालचक्र को पूरा कर कलयुग में भ्रमण कर रही है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की नींव वेदों, उपनिषदों और पुराणों में वर्णित ज्ञान पर मज़बूती से टिकी हुई है। भारतीय ज्ञान परंपराओं का अध्ययन कर विश्व की सर्वोच्च संस्थाओं ने समय-समय पर कई ऐसी तकनीकें विकसित की हैं जो दुनिया को चौंधियाती रही हैं। भारतीय ऋषि-मुनि परंपरा में ध्यान-योग-साधना के माध्यम से विश्व ही नहीं, ब्रह्मांड में कहीं भी घटित हुई या भविष्य में घटित होने वाली घटना के बारे में सटीक जानकारी दे दी जाती थी। शरीर की एक नब्ज़ को टटोल कर शरीर के स्वास्थ्य की हालत को बता दिया जाता था। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हीलिंग के माध्यम से बीमार शरीर को स्वस्थ कर दिया जाता था। बहुमूल्य ज्ञान की पोथियों को पढ़कर मस्तिष्क में समा लिया जाता था। इस कलयुग से पहले के तीनों युगों में हुए महायुद्धों में इस्तेमाल किए गए तीर (वर्तमान में जिन्हें मिसाइल या प्रेक्षापास्त्र कहा जाता है) अभिमंत्रित कर प्रकट किए जाते थे। सम्पूर्ण पृथ्वी को नष्ट करने की क्षमता रखने वाले ब्रह्मास्त्र (जोकि वर्तमान के परमाणु या हाइड्रोजन बम से भी कहीं ज्यादा विनाशकारी थे) भारतीय सभ्यता में मौजूद रहे हैं। कलयुग में द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जापान के हिरोशिमा और नागासाकी में परमाणु बम विस्फोट हुए जिसका सम्पूर्ण पृथ्वीलोक के नज़रिये से सीमित प्रभाव रहा, वहीं भगवान श्री कृष्ण महाभारत के युद्ध में ब्रह्मास्त्र के प्रयोग को रोकने के लिए हमेशा सतर्क रहे क्योंकि वे जानते थे कि ब्रह्मास्त्र के प्रयोग से संपूर्ण पृथ्वीलोक नष्ट हो जाएगा।

आधुनिक युग (कलयुग) में पश्चिमी और यूरोपीय सभ्यताएँ एवं संस्कृतियाँ आधुनिक तकनीकी ज्ञान के माध्यम से दुनिया को अपनी मुट्ठी में करने की कोशिश करती रही हैं। विनाशकारी आधुनिक हथियारों और राजनीतिक एवं आर्थिक ताक़त के बल पर चुनिंदा देश दुनिया पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अधिपत्य स्थापित करना चाहते हैं। पिछले कुछ वर्षों में,

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) तकनीक तेजी से विकसित हुई है। इस तकनीक को विकसित करने में ओपन ए.आई., गूगल डीपमाइंड, एन्थ्रोपिक, माइक्रोसॉफ्ट ए.आई., आईबीएम वॉटसन, एनवीडिया, मेटा ए.आई., एमाजॉन ए.डब्ल्यू.एस. ए.आई., टेस्ला ए.आई. जैसी कंपनियाँ अग्रणी भूमिका निभा रही हैं। इतिहास गवाह है कि आधुनिक तकनीकों से संपन्न देश ही आर्थिक रूप से समृद्ध रहे हैं। ए.आई. क्रांति से पहले सूचना प्रौद्योगिकी (आई.टी.) क्रांति ने दुनिया को चौंकाया था। आई.टी. क्रांति के दौर में ऐसा लगने लगा था कि इंसान की जगह कंप्यूटर ले लेंगे और अब ए.आई. क्रांति के दौर में ऐसा लग रहा है कि ए.आई. इंसान के दिमाग़ की जगह ले लेगा। आई.टी. क्रांति बाढ़ की तरह लगती थी तो वहीं ए.आई. क्रांति सुनामी की तरह लग रही है।

भारत एक ऐसा देश है जिसने तीन युगों में हीरक काल तो वहीं इसी कलयुग में स्वर्णकाल देखा है, और 1990-91 के दौर में दिवालियेपन की दहलीज़ तक भी पहुँचा था। इन्हीं उतार-चढ़ाव के बीच, पश्चिम से आई.टी. क्रांति की आँधी ने भारत में खलबली मचा दी थी। इस क्रांति के गर्भ से, 'कंप्यूटर' का उदय हुआ था जिसे ठंडे-ठंडे वातानुकूलित कमरे में विराजमान किया जाता था और लोग चप्पल-जूते उतार कर कमरे में जाया करते थे। युवाओं को लगने लगा था कि ये अंग्रेज़ी 'कंप्यूटर बाबा' हम सबको बेरोज़गार करके छोड़ेगा। लेकिन, ऐसा नहीं हुआ, लोग कंप्यूटर के अभ्यस्त होते गए और वही मोटा कंप्यूटर, स्लिम कंप्यूटर में बदल गया। स्लिम कंप्यूटर, लैपटॉप में बदलते हुए स्मार्ट मोबाइल फोनों में समा गए हैं। हर हाथ में, स्मार्ट मोबाइल फोन ने आई.टी. क्रांति के दानव रूपी 'कंप्यूटर' को मुट्ठी में कर लिया। रही सही क़सर, कोविडकाल ने पूरी कर दी, जब छोटे से लेकर बड़े बच्चों के हाथ में भी दानव के बच्चे आ गए और वे उनसे खेलने लगे। आज हर छोटे से बड़े, कम पढ़े-लिखे से ज्यादा पढ़े-लिखे और ग़रीब से अमीर लोगों तक 'छोटू' कंप्यूटर पहुँच गया है।

वर्तमान में, आई.टी. क्रांति में पुष्पित-पल्लिवित हुई ए.आई. क्रांति रुपी सुनामी संपूर्ण विश्व को अपने आगोश में ले रही है। प्रकृति का नियम है, जो जितने मज़बूत एवं संगठित होते हैं, वो हर आंधी, तूफ़ान, चक्रवात, सुनामी आदि का सामना कर नई सुबह के सूरज की तरह उभर कर आते हैं। भारत का तो इतिहास ही आंधी-तूफ़ानों से लड़ने वाला रहा है। भारत ने हमेशा इंसानी जिंदगी को सुखमयी एवं आरामदेय बनाने वाली तकनीकों का स्वागत किया है। हर सिक्के के दो पहलू होते हैं, ऐसे ही ए.आई. क्रांति के भी दो पहलू हैं। ए.आई. तकनीक मूलत: व्यापक एवं तथ्यात्मक डेटा की उपलब्धता पर के आधार पर सटीकता प्रदान करती है। इसलिए, दुनियाभर में साम-दाम-दंड-भेद किसी भी तरह से डेटा संग्रहण की होड़ लगी हुई है, वहीं डेटा संग्रहण केन्द्र यानि डेटा सेंटरों की मांग निरंतर बढ़ रही है जहां डेटा सुरक्षित रखा जा सके। डेटा सेंटरों के निर्माण बड़े पैमाने पर हो रहे हैं, कई कंपनियों के पास तो इतना डेटा हो गया है कि उसे संभालने के लिए जगह नहीं है और ये सेंटर बहुत ज्यादा बिजली उपभोग कर रहे हैं और गर्मी पैदा कर रहे हैं। नामी कंपनियाँ अपने डेटा को बड़े-बड़े कैप्सूलों में सुरक्षित कर समुद्र की गोद में रख रहे हैं। भविष्य में, आम उपभोग के लाखों टन कचरे के साथ-साथ डिजिटल कचरा भी इतना ज्यादा होने लगेगा कि उसके निस्तारण (डिस्पोज़ल) के लिए नए-नए उपाय करने होंगे।

दुनिया में तकनीकी रूप से समृद्ध अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी जैसे देशों ने दुनिया को सबसे अधिक तकनीकें दीं जिससे लोगों की जिंदगी आसान बनी। बदले में, इन देशों ने वैश्विक अर्थव्यवस्था में बड़े मुकाम हासिल किए। अमेरिका एक ओर जहाँ सूचना-प्रौद्योगिकी क्रांति का जनक रहा है, वहीं अब आई.ए. क्रांति का भी जनक बनकर उभरा है। आज दुनिया सूचना-प्रौद्योगिकी के मामले में पूरी तरह से अमेरिका पर निर्भर है और ए.आई. के मामले में भी ऐसा ही दिखाई दे रहा है। एनवीडिया, ओपन ए.आई., गूगल, मेटा, टेस्ला जैसी ए.आई. कंपनियाँ दुनिया में ए.आई. क्रांति का नेतृत्व कर रही हैं। सूचना क्रांति की शुरूआत से अब तक भारतीय आई.टी. कंपनियाँ अमेरिकी दिग्गज अमेरिकी आई.टी. कंपनियों की रीढ़ की हड्डी रही हैं। लेकिन, अब वैश्विक परिस्थितियाँ बदली दिख रही हैं और अमेरिकी कंपनियाँ ए.आई. तकनीक को साझा कर भारतीय आई.टी. कंपनियों से उस तरह काम नहीं करवाना चाहती हैं जैसे वे अब तक करती रही हैं। अमेरिका इस ए.आई. तकनीक पर एकाधिकार चाहता है, खुद के बनाये ए.आई. प्रोटोकॉल दुनिया भर में लागू करना चाहता है। अमेरिका का निकटतम प्रतिद्वंद्ववी चीन, अमेरिका के एकाधिकार को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है और खुद की ए.आई. तकनीक और प्रोटोकॉल विकसित कर रहा है। हाल ही में, अमेरिका ने चीन को ए.आई. तकनीक में आगे बढ़ने से रोकने के लिए अपनी एनवीडिया कंपनी को चीन को ए.आई. की नब्ज़ चिप का निर्यात करने से रोक दिया था, वहीं रक्षा उपकरणों, इलेक्ट्रिकल वाहनों, विंड टर्बाइन, बैटरियों, सोलर पैनलों आदि के निर्माण में बेहद जरूरी रेयर अर्थ मेटल्स के बादशाह चीन ने अमेरिका को इनकी आपूर्ति रोक दी थी जिससे अमेरिका को चीन के साथ विशेष समझौता करके एनवीडिया की ए.आई. चिप की आपूर्ति शुरू की वहीं चीन ने रेयर अर्थ मेटल्स की आपूर्ति बहाल कर दी। इस तरह, ए.आई. क्षेत्र की दो महाशक्तियाँ दुनिया पर राज़ करने के लिए तैयार हो रही हैं। ऐसी स्थिति में, हम भारतीय आई.टी. कंपनियों की ओर टकटकी लगाये देख रहे हैं कि भारत कैसे ए.आई. क्रांति में अपनी जगह बनायेगा। दुर्भाग्यवश, भारत तकनीकी विकास के मामले में अग्रणी नहीं रहा है, अपितु तकनीक विकसित करने वाले देशों को कुशल एवं सस्ती सहयोगी सेवाएँ प्रदान करता रहा है। भारतीय आई.टी. कंपनियाँ फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्विटर, यूट्यूब जैसे सोशल मीडया प्लेटफार्म तैयार नहीं कर पाई, जबकि दुनिया में सबसे ज्यादा भारतीय ही इन प्लेटफार्मों का प्रयोग करते हैं। भारत दुनिया का सबसे बड़ा तकनीक उपभोक्ता देश है, अगर भारत ने जल्द ही अपनी ए.आई. तकनीक विकसित नहीं की तो तेल खरीद के बाद ए.आई. वाले तकनीकी उत्पादों के खरीद के मामले में दूसरा सबसे बड़ा आयातक बन जाएगा जिससे हमारे विदेशी मुद्रा भंडार पर भारी दबाव पड़ेगा।

जहाँ तक, ए.आई. क्रांति का भारत पर प्रभाव का सवाल है, जहाँ सारी दुनिया के देश प्रभावित होंगे तो वहीं भारत भी प्रभावित तो होगा। रोज़गार के अवसरों पर असर पड़ सकता है, सोशल मीडिया उपयोक्ताओं को डीपफेक जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, विभिन्न कलाओं के माहिर लोगों को ए.आई. द्वारा चंद सेकेंडों में निर्मित कलाकारियों से दो-चार होना पड सकता है, निजता के अधिकारों पर संकट खड़ा हो सकता है, ए.आई. तकनीकों का कुशलता से प्रयोग करने वाले लोग सामान्य उपयोक्ताओं के मुकाबले ज्यादा और जल्दी अमीर होने लगेंगे जिससे अमीरी और गरीबी की खाई चौड़ी हो सकती है, लोग ए.आई. तकनीक पर इस कद्र निर्भर होने लगेंगे कि खुद की सोचने-समझने की शक्ति क्षीण होने लगेगी

और इंसान रोबोट में बदलने लगेगा। लेकिन, मैं एक बात विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि भारत दुनिया में ए.आई. का सबसे मज़बूती से सामना करेगा और इसे आपदा में अवसर की तरह लेकर 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लक्ष्य को प्राप्त करेगा। भारत दुनिया में सबसे युवा देश है जो तकनीक को आत्मसात करने के मामले में बेहद सजग है। ए.आई. तकनीकें वैश्विक पर्यावरण के संकट को दूर करने में अहम भूमिका निभायेंगी जिससे भारत को सबसे अधिक लाभ होगा क्योंकि भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि पर आधारित है और कृषि ही सबसे ज्यादा प्रभावित हो रही है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भारत को विश्व मेडिकल कैपिटल कहा जाता है, विकसित और विकासशील देशों के लोग सस्ते एवं सटीक इलाज के लिए भारत आते हैं। मेडिकल क्षेत्र में ए.आई. के उपयोग से सबसे ज्यादा लाभ भारत को ही होगा। भारत में खनन क्षेत्र, रोजगार एवं आर्थिक विकास के मामले में बेहद उपयोगी है और इस क्षेत्र में ए.आई. तकनीक से नई-नई एवं बहुमूल्य खदानों और तेल एवं गैस की खोज की जा सकती है जिससे भारत का नसीब बदल सकता है। सरकारी एवं निजी क्षेत्रों में ए.आई. तकनीकों से उत्पादकता में वृद्धि होगी, इससे होने वाली आर्थिक बचत को जनकल्याण में लगाया जा सकेगा। अंतरिक्ष विज्ञान के मामले में भारत दुनिया के अग्रणी देशों में शामिल है, हर साल दुनिया के कई देशों के सेटेलाइट अंतरिक्ष में भेजता है और मंगल एवं चाँद पर पदार्पण के साथ-साथ सूर्य के बेहद करीब जाकर अध्ययन कर रहा है। इस क्षेत्र में, ए.आई. तकनीकों के प्रयोग के बाद भारत का अंतरिक्ष विज्ञान क्षेत्र सोने का अंडा देने वाला क्षेत्र बन सकता है। भारत खाद्यान्नों के उत्पादन के मामले में अग्रणी देश है जो दुनिया की एक बड़ी जनसंख्या का पेट भरने की काबलियत रखता है, भले ही दुनिया ए.आई. की दुनिया में रहेगी, लेकिन खायेगी तो प्राकृतिक खाद्यान्न ही।

निष्कर्षत:, ए.आई. वर्तमान एवं भविष्य की सच्चाई है, इसे हमें जितनी जल्दी स्वीकार करेंगे उतनी जल्दी इसका सामना करने या उसका लाभ उठाने के लिए तैयार होंगे। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति दुनिया में सबसे उत्कृष्ट है जिसे ए.आई. के प्रभाव से कलंकित नहीं होने देना है। वसुधैव कुटुम्बकम् की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए, ए.आई. के फ़ायदों को छोटे-बड़े देशों तक पहुँचाना है। हमारे वेद, पुराण एवं उपनिषद आदि सदैव हमारे मार्गदर्शक रहे हैं, आधुनिकता के साथ इनके अनुसरण से हम भारत को विश्व पटल पर स्थापित रख सकते हैं। भारत की सबसे बड़ी ताक़त दुनिया का सबसे बड़ा उपभोक्ता बाज़ार होना है जिसमें उतरने के लिए दुनिया की ए.आई. शक्तियाँ भारत को साथ लेकर चलने के लिए तत्पर होंगी। दुनिया में ए.आई. को इंसान का विकल्प बनाने की हर कोशिश की जाएगी, लेकिन हमें इसे अपना एवं रिश्तों का विकल्प नहीं बनने देना है। ए.आई. को वरदान बनाना है, अभिशाप नहीं।

- **सुनील भुटानी 'रुद्राक्ष'**
राजभाषा अधिकारी
राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड,
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार

"आज मेरी बारी है"

सफलता से थोड़ी दूरी है,
क्योंकि तैयारी अभी अधूरी है,
वक्त लगेगा और मुझे, पर
लक्ष्य पर नजर पूरी है।

सपने देखे जो, बहुत बड़े,
उनकी जिम्मेदारी मेरी है,
आँखों में अब नींद कहां,
कहां हिम्मत मैंने हारी है।

बढ़ूँगी और हासिल करूंगी,
पूरी कोशिश जारी है,
होगा एक दिन ऐसा भी,
जब कहूंगी, हाँ, आज मेरी बारी है।।

प्रेमल वर्मा
कार्यालय सहायक (वित्त)
एन.पी.सी.सी. लिमिटेड

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा नराकास गुरुग्राम के कुछ सदस्य कार्यालयों के साथ विचार-विमर्श कार्यक्रम

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा दिनांक 14 फरवरी 2025 को शौर्य, सीआरपीएफ, वसंत कुंज, नई दिल्ली में नराकास गुरूग्राम, सोनीपत, भिवानी और नराकास दिल्ली के कुछ सदस्य कार्यालयों के साथ विचार-विमर्श कार्यक्रम आयोजित किया। इस बैठक में, नराकास गुरूग्राम के अध्यक्ष श्री आर.के. अग्रवाल (अध्यक्ष सह प्रबंध निदेशक- वाप्कोस एवं एन पी सी सी) और नराकास गुरूग्राम के सदस्य सचिव श्री प्रदीप कुमार, वरिष्ठ कार्यकारी निदेशक (रा.भा.का.) तथा सभी संबंधित नराकास के अध्यक्षों और वरिष्ठ अधिकारी शामिल हुए। इस बैठक का समन्वय कार्य वाप्कोस गुरूग्राम कार्यालय द्वारा किया गया। माननीय संसद सदस्यों और समिति सचिवालय के अधिकारियों ने वाप्कोस के समन्वय कार्य की प्रशंसा की।

पावरग्रिड की राजभाषा सम्बन्धी गतिविधियां

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किए गए निरीक्षण

क्रम	दिनांक	कार्यालय
1	6 जनवरी 2025	संपर्क कार्यालय, चेन्नई
2	9 जनवरी 2025	400/220 केवी कोच्चि उपकेंद्र
3	25 फरवरी 2025	400/220 केवी उपकेंद्र, पंचकुला,
4	25 फरवरी 2025	400/220 केवी गैसरोधित उपकेंद्र, चम्बा
5	14 फरवरी 2025	केंद्रीय कार्यालय
6	21 अप्रैल, 2025	400/220 केवी बोईसर उपकेंद्र
7	24 अप्रैल 2025	765/400/220 केवी जीआईएस पुणे (शिक्रापुर) उपकेंद्र
8	24 अप्रैल 2025	400/200 केवी तलेगॉव (पुणे) उपकेंद्र
9	26 मई 2025	132 केवी कुमारघाट उपकेंद्र
10	26 मई 2025	132 केवी इम्फाल उपकेंद्र
11	30 मई 2025	क्षेत्रीय मुख्यालय, शिलांग

कार्यशाला का आयोजन

दिनांक 20 मार्च, २०२५ को ई-5 तथा ई-6 स्तर के कार्मिकों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। संकाय के रूप में पधारे श्री कुमार पाल शर्मा जी, संयुक्त निदेशक (कार्यान्वयन) राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने "संसदीय समिति की निरीक्षण प्रश्नावली" के विषय में केंद्रीय कार्यालय के हिंदी नोडल अधिकारियों को व्याख्यान दिया।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति

पावरग्रिड, केंद्रीय कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की तिमाही बैठक श्री आर. के. त्यागी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय की अध्यक्षता में दिनांक 21 मार्च, 2025 को प्रात: 11:30 बजे 7वें तल स्थित सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई। इस बैठक में श्री जी. रविशंकर, निदेशक (वित्त), डॉ. यतींद्र द्विवेदी, निदेशक (कार्मिक), श्री बी वी आर मोहन, निदेशक (परियोजना), श्री नवीन कुमार, मुख्य सतर्कता अधिकारी, केंद्रीय कार्यालय के सभी विभागाध्यक्ष एवं ऑनलाइन माध्यम से जुड़े केंद्रीय कार्यालय के सभी हिंदी नोडल अधिकारी तथा क्षेत्रीय मुख्यालयों के हिंदी अधिकारी सम्मिलित हुए। कार्यपालक निदेशक (राजभाषा एवं मा.सं.वि.) व सदस्य सचिव ने अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक महोदय, निदेशक मंडल के सदस्यों एवं बैठक में उपस्थित सभी विभागाध्यक्षों का स्वागत किया। बैठक में राजभाषा कार्यान्वयन से जुड़े विभिन्न मदों पर चर्चा की गई।

प्रज्ञान पोर्टल पर पाठ्यक्रमों का द्विभाषीकरण

पावर ग्रिड के मानव संसाधन विकास उपक्रम के अंतर्गत 'प्रज्ञान पोर्टल' की स्थापना की गई है। इस पोर्टल के माध्यम से विविध पाठ्यक्रमों को सुव्यवस्थित रूप से प्रकाशित किया जाता है। इसी क्रम में तीन तकनीकी तथा निवारक सतर्कता संबंधी विषयों पर आधारित पाठ्यक्रमों का हिंदी रूपांतरण प्रस्तुत किया गया, जिससे बड़ी संख्या में प्रतिभागी लाभान्वित हुए।

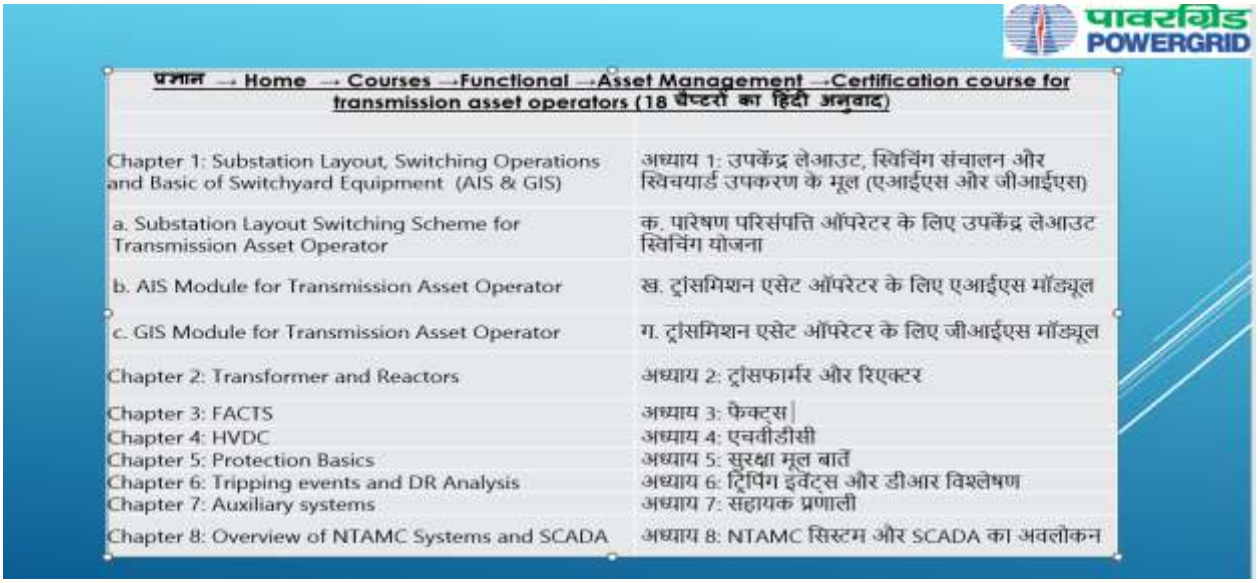

विद्युत मंत्रालय की सलाहकार समिति की बैठक का समन्वय कार्य

दिनांक 19 जून 2025 को दिल्ली में विद्युत मंत्रालय की राजभाषा सलाहकार समिति की बैठक का आयोजन किया गया। विद्युत मंत्रालय से प्राप्त निर्देशों के अनुरूप, पावर ग्रिड द्वारा इस बैठक से संबंधित समस्त व्यवस्थाएँ सुनिश्चित की गईं। बैठक में मंत्रालय के सभी विभागों तथा अधीनस्थ सार्वजनिक उपक्रमों (पीएसयू) के अधिकारियों ने सक्रिय भागीदारी एवं पूर्ण प्रतिबद्धता के साथ सहभागिता की। समिति के सभी सदस्य भी बैठक में उपस्थित रहे। इस बैठक की अध्यक्षता माननीय विद्युत मंत्री जी ने की, जिन्होंने राजभाषा के आधिकारिक संवर्धन हेतु अनेक सार्थक एवं व्यावहारिक निर्देश प्रदान किए।

नराकास, गुरुग्राम के तत्वावधान में प्रतिभागिता

दिनांक 12 जून 2025 को नराकास, गुरुग्राम के तत्वावधान में केंद्रीय कार्यालय पावरग्रिड में "आशुभाषण प्रतियोगिता" का आयोजन किया गया, जिसमें पावर ग्रिड सहित कुल 20 कार्यालयों ने सक्रिय रूप से प्रतिभागिता की। इस प्रतियोगिता के माध्यम से प्रतिभागियों ने राजभाषा में प्रभावशाली वक्तृत्व कौशल का प्रदर्शन किया, जिससे राजभाषा के प्रति जागरूकता एवं अभिरुचि को प्रोत्साहन मिला।

तकनीकी पुस्तक का विमोचन

केंद्रीय इंजीनियरिंग-एचवीडीसी विभाग द्वारा मूल रूप से रचित एवं संकलित दो तकनीकी पुस्तकें — **"एचवीडीसी ट्रांसमिशन के मूल सिद्धांत और अनुप्रयोग"** तथा **"ऊर्जा रूपांतरण: नेट ज़ीरो और स्थिरता की ओर"** — राजभाषा विभाग के सहयोग से हिंदी भाषा में प्रकाशित की गई हैं। यह उल्लेखनीय है कि इन पुस्तकों की रचना लेखक द्वारा स्वयं की गई है, न कि किसी अनुवाद या पुनर्लेखन के रूप में। इन कृतियों का उद्देश्य न केवल एचवीडीसी ट्रांसमिशन और ऊर्जा रूपांतरण जैसे जटिल विषयों में हिंदी में मूल पुस्तकों को उपलब्ध करवाना है, बल्कि नेट ज़ीरो और स्थिरता जैसे वैश्विक लक्ष्यों की दिशा में जागरूकता और तकनीकी समझ को भी बढ़ावा देना है।

राजभाषा अधिकारियों की 11वीं वार्षिक बैठक का आयोजन

पावरग्रिड राजभाषा अधिकारियों की 11वीं वार्षिक बैठक का आयोजन दिनांक 27-28 जून, 2025 को पाल, मानेसर में किया गया। इस बैठक में आगामी वार्षिक कार्यक्रम (2025-26) पर विचार-विमर्श किया गया तथा राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना से संबंधित नवीनतम अंक तालिका प्रस्तुत की गई। इसके अतिरिक्त, हिंदी प्रोत्साहन हेतु नकद पुरस्कार योजना की एकरूपता सुनिश्चित करने, उपकेंद्रों द्वारा नराकास की सदस्यता, हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रमों की रूपरेखा, राजभाषा कार्यशालाओं के आयोजन, निरीक्षण संबंधी लक्ष्यों एवं अन्य महत्वपूर्ण विषयों पर भी विस्तृत चर्चा की गई।

माननीय केंद्रीय विद्युत मंत्री द्वारा राजभाषा सम्मान शील्ड

दिनांक 19 जून 2025 राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य तथा सलाहकार समिति बैठक के सफल समन्वय हेतु पावरग्रिड को माननीय केंद्रीय विद्युत मंत्री द्वारा राजभाषा सम्मान शील्ड प्रदान कर सम्मानित किया गया। श्री आर. के. त्यागी, सीएमडी और डॉ. यतीन्द्र द्विवेदी, निदेशक (कार्मिक) ने यह पुरस्कार प्राप्त किया।

ग्रिडकॉन

दिनांक **09 मार्च 2025** को माननीय **विद्युत तथा आवासन एवं शहरी कार्य मंत्री श्री मनोहर लाल** ने **यशोभूमि कन्वेंशन सेंटर, द्वारका** में आयोजित **ग्रिडकॉन 2025** का शुभारंभ किया।

यह **अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन सह प्रदर्शनी (09 से 11 मार्च 2025) ग्रिड लचीलापन (Grid Resilience), संपत्ति प्रबंधन (Asset Management)** तथा **डिजिटल परिवर्तन (Digital Transformation)** जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर केंद्रित रही, जिसका उद्देश्य एक **अधिक विश्वसनीय, सतत एवं अनुकूलनीय पावर ग्रिड** हेतु नवाचारों को बढ़ावा देना है।

अपने संबोधन में माननीय मंत्री ने आयोजकों द्वारा किए गए **सुव्यवस्थित आयोजन** और विशेष रूप से **ऊर्जा क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी** पर आयोजित सत्रों की सराहना की। उन्होंने कहा कि **विविधता (Diversity)** ऊर्जा उद्योग के समग्र विकास एवं नवाचार को सशक्त बनाती है।

माँ वो मेरी माँ

माँ वो मेरी माँ।
कब मैं घुटनों पर रेंगते–रेंगते,
कब पैरों पर खड़ा हो गया ।
तेरी ममता की छाँव में,
न जाने कब मैं बड़ा हो गया।
माँ वो मेरी माँ।।
काला टीका लगाकर जब बाहर ले जाती थी,
ताकि किसी की नजर ना लग जाय,
खुद रूखा – सुखा खा कर हमें दूध मलाई खिलाया करती थी,
आज भी तू वैसी ही है।
माँ वो मेरी माँ।।
मैं ही मैं हूँ हर जगह,
प्यार ये तेरा कैसा है?
सीधा – साधा भोला – भाला,
मैं ही सबसे अच्छा हूँ।
कितना भी हो जाऊँ बड़ा,
"माँ" मैं आज भी तेरा नन्हा सा बच्चा हूँ।।
माँ वो मेरी माँ।।

देव शिवानन्द
कार्यालय सहायक (वित्त)
एन.पी.सी.सी. लिमिटेड

धरती माता पर प्रहार

हवाई अड्डे, पुल इमारतें ,सड़क, नहर और ढांचे सबका मैं निर्माण करूं
मजबूर हूं धरती मां अम्बे, तुम ही पर प्रहार करूं

कीट जीव हो या कुछ पौधे तुम्ही का संहार करूं
मजबूर हूं धरती मां अम्बे तुम्ही पर प्रहार करूं

जय जगजननी धरती माता तुम्ही का गुणगान करूं
तुम्ही की छत्र छाया में रहकर तुम ही पे प्रहार करूं

हम मजबूर अभियंतागण कैसे मैं विनीत करूं
जय जगजननी धरती माता तुम्ही का गुणगान करूं

अंजली कुमार
एन.पी.सी.सी. लिमिटेड

"आईपीएफटी: नवाचार से संरक्षण की ओर"

सन् 1991 में रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय के अंतर्गत स्थापित हुआ कीटनाशक सूत्रीकरण प्रौद्योगिकी संस्थान (आईपीएफटी), गुड़गांव, आज देश में कृषि रसायन क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण अनुसंधान केंद्र बन चुका है। यह संस्थान उन संभावनाओं पर कार्य कर रहा है, जहाँ कीटनाशक सुरक्षित, प्रभावी और पर्यावरण के अनुकूल हों।

आईपीएफटी में अनुसंधान कार्य तीन प्रमुख विभाग के माध्यम से संचालित होते हैं –

सूत्रीकरण विभाग, जैवविज्ञान विभाग, और विश्लेषणात्मक विभाग।

यहाँ अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं और विश्लेषणात्मक उपकरणों के माध्यम से कीटनाशकों की रासायनिक संरचना, प्रभावकारिता, अवशेष, और प्राकृतिक शत्रुओं पर प्रभाव का गहन अध्ययन किया जाता है। संस्थान को ISO/IEC 17025:2017 के अंतर्गत NABL (नेशनल एक्रेडिटेशन बोर्ड फॉर टेस्टिंग एंड कैलिब्रेशन लैबोरेटरीज) मान्यता, और GLP (गुड लेबोरेटरी प्रैक्टिस) अनुरूपता प्राप्त है।

जैवविज्ञान विभाग संस्थान की प्रमुख इकाइयों में से एक है, जहाँ विभिन्न कीटनाशक फॉर्मूलेशन का प्रयोगशाला परीक्षण, ग्रीनहाउस ट्रायल, तथा फील्ड स्तर पर अध्ययन किया जाता है। यह विभाग फाइटोटॉक्सिसिटी, फाइटोटोनिटी, अनुकूलता, एवं कीटों के प्राकृतिक शत्रुओं पर प्रभाव जैसे पहलुओं पर गहन परीक्षण करता है।

संस्थान CIB&RC (केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड और पंजीकरण समिति) के दिशा-निर्देशों के अनुसार कीटनाशकों के पंजीकरण हेतु आवश्यक डेटा पैकेज तैयार करता है और उद्योगों को अनुसंधान एवं विकास सहायता सेवाएँ प्रदान करता है।

वर्तमान में आईपीएफटी ने इकोटॉक्सिकोलॉजी लेबोरेटरी में आर्थिक सहयोग और विकास संगठन (ओईसीडी) के दिशा-निर्देशों के अनुरूप, स्थलीय (भूमिगत) एवं जलीय (जल आधारित) पारिस्थितिकी जीवों पर विषविज्ञानी (इकोटॉक्सिकोलॉजी) प्रभावों का अध्ययन की सुविधा भी उपलब्ध कर लिया है। इस सुविधा का उद्देश्य कृषि रसायनों के पर्यावरण पर पड़ने वाले संभावित दुष्प्रभावों का वैज्ञानिक मूल्यांकन करना है। इकोटॉक्सिकोलॉजी एक उभरता हुआ विज्ञान है, जो यह अध्ययन करता है कि कीटनाशक, उर्वरक और अन्य रसायन विभिन्न गैर-लक्षित जैविक प्रजातियों और पारिस्थितिकी तंत्र पर किस प्रकार प्रभाव डालते हैं।

आईपीएफटी द्वारा दी जाने वाली प्रमुख सेवाओं में शामिल हैं:

- जैव-प्रभावकारिता और दीर्घकालिक प्रभाव अध्ययन।
- सार्वजनिक स्वास्थ्य व घरेलू कीट नियंत्रण हेतु डेटा सृजन करना।
- केवीके (कृषि विज्ञान केंद्र) और कार्यशालाओं के माध्यम से कृषि विस्तार गतिविधियाँ।
- प्रमुख फसलों में IPM (एकीकृत कीट प्रबंधन) हेतु परामर्श।
- प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को व्यवहारिक ज्ञान।

संस्थान द्वारा प्रयोगशाला आधारित जैव-परीक्षण, फील्ड ट्रायल्स, पौधों की वृद्धि पर प्रभाव, कीटनाशकों की विषाक्तता और दृढ़ता अध्ययन जैसी गतिविधियाँ सतत रूप से संचालित की जा रही हैं।

निष्कर्ष:

आईपीएफटी न केवल एक वैज्ञानिक संस्थान है, बल्कि यह कृषि क्षेत्र की प्रगति और पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक सशक्त पहल है। संस्थान की अनुसंधान गतिविधियाँ, सेवाएँ और नवाचार, आधुनिक कृषि को सुरक्षित, प्रभावी और टिकाऊ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। आईपीएफटी भारत में कृषि रसायन क्षेत्र के लिए गुणवत्ता, विश्वसनीयता और नवाचार का प्रतीक बन चुका है।आईपीएफटी का नवाचार आधारित शोध दृष्टिकोण, उद्योगों के साथ साझेदारी, और छात्रों को दी जाने वाली प्रशिक्षण सेवाएँ इसे कृषि रसायन विज्ञान के क्षेत्र में एक अग्रणी संस्थान के रूप में स्थापित करती हैं। इसके अनुसंधान न केवल वैज्ञानिक गुणवत्ता के मानकों पर खरे उतरते हैं, बल्कि किसानों को व्यावहारिक समाधान भी प्रदान करते हैं। वर्तमान परिदृश्य में, जब कि वैश्विक स्तर पर सस्टेनेबल एग्रीकल्चर (टिकाऊ कृषि) की आवश्यकता बढ़ रही है, आईपीएफटी जैसी संस्थाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। यह संस्थान वैज्ञानिक नवाचार, पर्यावरणीय सजगता और कृषि उत्पादकता के बीच संतुलन स्थापित करते हुए भविष्य की कृषि को सुरक्षित, सतत और समृद्ध बनाने की दिशा में सशक्त योगदान दे रहा है।

-अभिषेक श्रीवास्तव, रोहित कुमार सिंह, गुलशन कुमार वर्मा एवं डॉ दीपक कुमार जायसवाल,
जैव विज्ञान विभाग, कीटनाशक सूत्रीकरण प्रौद्योगिकी संस्थान,
रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय, भारत सरकार

उप क्षेत्रीय कार्यालय गुरुग्राम क.रा.बी. निगम में आयोजित 05 कार्य दिवस पूर्णकालिक हिंदी कार्यशाला सह संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण-एक रिपोर्ट

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति गुरुग्राम के तत्वाधान में दिनांक: 17 मार्च से 21 मार्च, 2024 तक कार्यालय में 05 दिवसीय पूर्णकालिक हिंदी कार्यशाला सह संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण का आयोजन किया गया जिसमें केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली के संकाय अधिकारियों द्वारा व्याख्यान देकर प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित किया गया|

हिंदी कार्यशाला सह संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण का शुभारंभ दिनांक 17 मार्च, 2025 को मुख्य अतिथि श्री नरेश कुमार-संयुक्त निदेशक एवं श्रीमती लेखा सरीन-सहायक निदेशक केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली तथा कार्यालय प्रमुख श्री सुनील यादव, संयुक्त निदेशक(प्रभारी) महोदय की अध्यक्षता में सरस्वती वंदना के साथ पंचदीप प्रज्ज्वलित कर किया गया | कार्यालय प्रमुख ने शॉल, श्रीफल और प्लांट पॉट भेंटकर मुख्य अतिथि महोदय का अभिनंदन एवं आतिथ्य सत्कार किया|

पांच दिवसीय इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति गुरुग्राम के सदस्य कार्यालयों द्वारा नामित 21 अधिकारियों को प्रशिक्षित किया गया|

प्रशिक्षण के शुभारंभ कार्यक्रम में श्री नरेश कुमार ने बताया कि केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो वर्ष 1971 से केंद्रीय सरकार के कार्मिकों को अनुवाद कार्य में प्रशिक्षित कर रहा है तथा भारत सरकार के सभी मंत्रालयों के अनुवाद कार्य को निष्पादित कर रहा है | उन्होंने बताया कि अनुवाद भाषाओँ के मध्य एक सेतु का कार्य करता है | क्षेत्र चाहे कोई भी हो अनुवाद की आवश्यकता परम महत्वपूर्ण है|

श्रीमती लेखा सरीन ने कहा कि अनुवाद ही एक ऐसा माध्यम है जिससे हम किसी अन्य भाषा में लिखी गई बातों को अपनी भाषा में समझ सकते हैं|

कार्यालय प्रमुख श्री सुनील यादव ने अपने वक्तव्य में कहा कि इस कार्यालय द्वारा यह एक नया प्रयोग है जिसमें केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के संकाय अधिकारियों का योगदान अविस्मरणीय है | उन्होंने सभी प्रशिक्षार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमें जीवन में हमेशा कुछ न कुछ नया सीखते रहना चाहिए और यह हिंदी कार्यशाला सह अनुवाद प्रशिक्षण एक नवप्रयोग एवं नवाचार है|

शुभारंभ कार्यक्रम के समापन में डॉ. स्वीटी यादव-सहायक निदेशक ने केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के अधिकारियों, कार्यालय प्रमुख एवं प्रतिभागियों का साधुवाद करते हुए कहा कि हमें सीखना कभी बंद नहीं करना चाहिए तथा प्रशिक्षण एक निरंतर प्रक्रिया है तथा जीवन के प्रत्येक कार्य और क्षेत्र में हम हमेशा कुछ न कुछ सीखते है|

तदुपरांत केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के संकाय अधिकारियों द्वारा निम्नानुसार तिथिवार प्रशिक्षण प्रदान किया गया:-

अपराह्न			पूर्वाह्न	
दिनांक	विषय	व्याख्याता	विषय	व्याख्याता
17.03.2025	भारत सरकार की राजभाषा नीति	श्री नरेश कुमार संयुक्त निदेशक	सामान्य प्रशासन से जुड़े वाक्यांशों और अभिव्यक्तियों पर व्यावहारिक चर्चा	श्रीमती लेखा सरीन सहायक निदेशक
18.03.2025	अनुवाद की प्रक्रिया	श्री जनवारियुस तिर्की सहायक निदेशक	सूचना प्रौद्योगिकी एवं अनुवाद	डॉ. मोहनचंद्र बहुगुणा सहायक निदेशक
19.03.2025	कार्यालयी अनुवाद की समस्याएं एवं समाधान	डॉ. मोहनचन्द्र बहुगुणा सहायक निदेशक	कार्यालयी सामग्री का अनुवाद अभ्यास	श्री सत्येंद्र राठी सहायक निदेशक
20.03.2025	मानक वर्तनी - समस्याएं एवं समाधान	श्रीमती लेखा सरीन सहायक निदेशक	पारिभाषिक शब्दावली निर्माण की प्रक्रिया	श्री जनवारियुस तिर्की सहायक निदेशक
21.03.2025	अनेकार्थी शब्दों के अनुवाद की समस्या एवं समाधान	श्रीमती लेखा सरीन सहायक निदेशक		

प्रशिक्षण का समापन कार्यालय प्रमुख श्री सुनील यादव-संयुक्त निदेशक(प्रभारी) की अध्यक्षता में हुआ जिसमें केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, नई दिल्ली से संयुक्त निदेशक श्री नरेश कुमार को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया | साथ ही केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की अधिकारी श्रीमती लेखा सरीन भी उपस्थित रहीं|

श्री नरेश कुमार ने अपने वक्तव्य में अनुवाद का कार्यालयी कामकाज में महत्व बताते हुए कहा कि अनुवाद से सूचना, ज्ञान और विचारों का प्रसार होता है | श्रीमती लेखा सरीन ने गीत प्रस्तुत कर कार्यक्रम को खुशनुमा बना दिया |

कार्यालय प्रमुख श्री सुनील यादव ने कहा कि कार्यालय के लिए यह प्रशिक्षण एक उपलब्धि है जिसमें केंद्रीय अनुवाद व्यूरो के अधिकारियों का विशेष और अविस्मरणीय योगदान रहा | अपने वक्तव्य को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा कि आज जबकि हमारी केंद्र सरकार हिंदी प्रयोग, प्रचार-प्रसार और प्रोत्साहन पर विशेष बल दे रही है ऐसे में हमारा यह परम दायित्व बन जाता है कि हम मन-वचन-कर्म से हिंदी को अपनाएँ, हिंदी में कार्य करें, साथ ही दूसरों को भी हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करें |

इसके पश्चात् प्रशिक्षण के प्रतिभागियों से फीडबैक प्राप्त की गई तथा केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र वितरित किए गए|

प्रशिक्षण के समापन सत्र में डॉ. स्वीटी यादव-सहायक निदेशक ने केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के संकाय अधिकारियों एवं प्रतिभागियों का धन्यवाद ज्ञापित किया|

"किसान"

देखा है हमने बचपन से मेहनत करता एक इंसान,
दिनभर जो खेतों में रहता, कहता है खुद को किसान।

सूरज की जलती गर्मी में, हल चलाता, फसल उगाता,
भूखा मेहनत कर करके, लोगों की वो भूख मिटाता।
फटे वस्त्र वो धारण करके, धूप से जलते खेतों में जाता,
भाग भागकर पूरे खेत में, जानवरों से वो फसल बचाता।

फसल काटकर, गहाई करके, मुनाफे की उम्मीद से मण्डी जाता,
कम पैसे लेकर अक्सर ही, वापस घर लौटकर आता।
फिर एक नई उम्मीद, नई आशा से, वह खेती में जुट जाता
ज्यादा फसल उगाने की आस में, और अधिक पसीना बहाता,
फिर वही चक्र दोहराता। फिर वही चक्र दोहराता।

योगेश कौशल
वरिष्ठ प्रबंधक (सिविल)
एन.पी.सी.सी. लिमिटेड

सेकंड इनिंग

बार बार मन में आता है खयाल,

कि जिन के साथ गुजारे इतने साल,

अब रोज न वो बात होगी, न मुलाक़ात होगी |

सोचती हूँ, समेट लूँ हर शै हर पल के लिए,

लेकिन ये पल भी क्या, जो रुकता नहीं, इक पल के लिए |

ऐसा लगता है मेरा कोई हिस्सा टूट रहा है ,

होता है एहसास पीछे कुछ छूट रहा है |

यह पल है थोड़ा मुश्किल, पर गर्व भी है साथ ,

यादों का ये झोला लेकर, करनी है नई शुरुआत |

मित्रों संग हंसी ठिठोली और सांझा की बातें ,

दिल के कोने में बसी रहेंगी सब प्यारी मुलाकातें |

चलो अब बढ़ते हैं नई दिशा की ओर,

सपने सँजोये आँखों में, खुली दुनिया चहूँ ओर |

रिटायरमेंट तो सिर्फ जिंदगी की एक कड़ी है ,

अभी आगे और खुल कर जीना है,

क्योंकि जिंदगी जीने के लिए बहुत बड़ी है |

अल्का गनोत्रा
लेखा अधिकारी
इंडियनऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड

राइट्स लिमिटेड, निगमित कार्यालय, शिखर, गुरुग्राम
वर्ष के दौरान राजभाषा संबंधी गतिविधियां

1. राजभाषा निदेशालय, रेलवे बोर्ड, नई दिल्ली में दिनांक 18/07/2025 को निदेशक राजभाषा की अध्यक्षता में 'पुस्तक चर्चा कार्यक्रम' का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में सुश्री ऊर्जा श्रीवास्तव, वरिष्ठ प्रबंधक/राजभाषा ने प्रसिद्ध लेखिका 'अनुराधा बेनीवाल' के यात्रा वृत्तांत 'लोग जो मुझमें रह गए' की समीक्षा प्रस्तुत की।

2. अध्यक्ष एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, रेलवे बोर्ड की अध्यक्षता में 26 सितंबर, 2025 को रेलवे बोर्ड की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 156 वीं बैठक में श्री राहुल मित्थल, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री मनीष भटनागर, मुख्य राजभाषा अधिकारी व महाप्रबंधक/प्रशासन और सुश्री ऊर्जा श्रीवास्तव, व.प्र./राजभाषा ने सहभागिता की।

3. उपर्युक्त बैठक के दौरान सुश्री ऊर्जा श्रीवास्तव, वरिष्ठ प्रबंधक/राजभाषा ने राइट्स लिमिटेड की ओर से साहित्यकार के बारे में मद के अंतर्गत **प्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई के बारे में प्रस्तुति दी, जिसकी समिति द्वारा सराहना की गई।**

4. जून 2025 में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की स्थापना के 50 वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में आयोजित अखिल भारतीय आशुभाषण प्रतियोगिता में राइट्स लिमिटेड के राजभाषा अनुभाग में कार्यरत वरिष्ठ प्रबंधक सुश्री ऊर्जा श्रीवास्तव को सांत्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ।

5. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा आयोजित किए गए सभी अखिल भारतीय सम्मेलनों में राइट्स का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया गया।

7. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), गुरुग्राम के तत्वावधान में राइट्स लिमिटेड, निगमित कार्यालय द्वारा दिनांक 04.07.2025 को प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

8. नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), गुरुग्राम की वर्ष 2025 की प्रथम अर्धवार्षिक बैठक में राजभाषा हिंदी के कार्यान्यवन और प्रचार-प्रसार के कार्यों के लिए राइट्स लिमिटेड, निगमित कार्यालय, गुरुग्राम को प्रोत्साहन प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। प्रमाण पत्र श्री पी.एस. मीणा कार्यकारी निदेशक आरआई/मेट्रो एवं राजभाषा टीम ने प्राप्त किया।

9. कर्मचारियों को पुस्तकें पढ़ने के लिए जागरूक करने के उद्देश्य से मुंशी प्रेमचंद की जयंती पर विशिष्ट प्रकाशन जारी किया गया।

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप-समिति द्वारा राइट्स निगमित कार्यालय सहित नराकास, गुरुग्राम के कुछ सदस्य कार्यालयों के साथ विचार विमर्श कार्यक्रम का आयोजन।

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप-समिति ने दिनांक 14 फरवरी, 2025 को माननीय उपाध्यक्ष, श्री भर्तृहरि मेहताब की अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, गुरुग्राम के कुछ सदस्य कार्यालयों के साथ विचार-विमर्श कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें राइट्स की ओर से निदेशक (वित्त), श्री कृष्ण गोपाल अग्रवाल ने सहभागिता की। इस अवसर पर समिति के माननीय उपाध्यक्ष एवं सदस्यों ने राइट्स लिमिटेड में हिंदी के प्रयोग के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की।

राइट्स लिमिटेड में हिंदी पखवाड़ा-2025 का आयोजन

राइट्स लिमिटेड में 14 सितंबर से 29 सितंबर 2025 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। जिसकी शुरुआत गांधीनगर में अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में सहभागिता करने के साथ की गई। इस अवसर पर अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का हिंदी दिवस संदेश जारी किया गया। पखवाड़े के दौरान हिंदी टाइपिंग, निबंध, राजभाषा एवं हिंदी ज्ञान, चित्र अभिव्यक्ति, राजभाषा एवं सामान्य ज्ञान क्विज, आशुभाषण प्रतियोगिताओं के साथ-साथ राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर की जयंती के अवसर पर साहित्यिक संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त अखिल भारतीय स्तर पर 'हिंदी स्लोगन' लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

पखवाड़े के अंतिम दिन अर्थात् 29 सितंबर, 2025 को निदेशक तकनीकी, राइट्स लिमिटेड की अध्यक्षता में राइट्स राजभाषा कार्यान्वयन समिति की त्रैमासिक बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें राजभाषा के प्रयोग-प्रसार की प्रगति की समीक्षा की गई। इस अवसर पर हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं एवं वार्षिक प्रोत्साहन योजनाओं के पुरस्कार विजेताओं को प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए और राइट्स की हिंदी ई-पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के तीसरे अंक का विमोचन किया गया।

नराकास, गुरुग्राम के तत्वावधान में राइट्स लिमिटेड, निगमित कार्यालय, गुरुग्राम में 'हिंदी पुस्तक चर्चा कार्यक्रम' का आयोजन

राजभाषा हिंदी को प्रोत्साहन देने के लिए राइट्स लिमिटेड, निगमित कार्यालय, शिखर, गुरुग्राम में दिनांक 27.11.2025 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), गुरुग्राम के तत्वावधान में 'हिंदी पुस्तक चर्चा कार्यक्रम' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री मनीष भटनागर, मुख्य राजभाषा अधिकारी व महाप्रबंधक/प्रशासन ने की। नराकास, गुरुग्राम के सदस्य कार्यालयों और राइट्स कार्यालय से कई प्रतिभागियों ने इस पुस्तक चर्चा कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक सहभागिता कर इसे सार्थक बनाया।

हिंदी पुस्तक चर्चा के दौरान कई महत्वपूर्ण पुस्तकों पर वक्ताओं ने चर्चा की। २७ नवंबर को हरिवंश राय बच्चन की जयंती पर उन्हें स्मरण करते हुए सबसे पहले उनकी रचना 'मधुशाला' पर प्रस्तुति दी गई। इसके बाद श्री लाल शुक्ल की 'राग दरबारी', दिनकर की 'रश्मीरथी', जे.साई दीपक की 'इंडिया दैट इज़ भारत', धर्मवीर भारती की 'गुनाहों का देवता', मुंशी प्रेमचंद की 'गोदान', विवेकानंद की जीवनी, भीष्म साहनी के कहानी संग्रह 'निशाचर' और विद्यासागर नौटियाल के कहानी संग्रह 'मेरी कथा यात्रा' जैसी अतुलनीय पुस्तकों पर चर्चा हुई। किताबें पढ़ने की परंपरा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया जो वक्ताओं की सक्रिय सहभागिता से अत्यंत सफल रहा।

इस अवसर पर सुश्री सुमेधा कंधारी, संयुक्त महाप्रबंधक/प्रशासन भी उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन सुश्री ऊर्जा श्रीवास्तव, वरिष्ठ प्रबंधक/राजभाषा द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संयोजन और व्यवस्था कार्य राजभाषा अनुभाग द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय सौर ऊर्जा संस्थान द्वारा पूर्ण दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन

जैसा कि हम सभी जानते ही हैं, भारत सरकार के राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार प्रत्येक तिमाही के दौरान राष्ट्रीय सौर ऊर्जा संस्थान, गुरूग्राम में पूर्ण दिवसीय हिन्दी कार्यशाला आयोजित की जाती है। इसके लिए संस्थान के कार्मिकों के बीच हिन्दी में काम करने की झिझक दूर करने का प्रयास किया जाता है। इस हेतु प्रत्येक तिमाही में कम से कम एक हिन्दी कार्यशाला अवश्य आयोजित की जाती है। विगत वित्तीय वर्ष 2024-25 में हमारे संस्थान में चार पूर्ण दिवसीय कार्यशालाएं आयोजित हुई। कार्यालय के कर्मचारियों को हिन्दी में कार्य करने में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए हिन्दी विभाग द्वारा यह कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं।

कार्यक्रमों का शुभारंभ संस्थान के उपनिदेशक, श्री सन्दीप सहरावत के स्वागत भाषाण द्वारा किया गया। इसी श्रृखंला में दिनांक 27 जून, 2024 को संस्थान के प्रभाकर समिति हॉल में एक पूर्ण दिवसीय हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमें प्रशिक्षक महोदय ने "राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम – निर्धारित लक्ष्य और प्राप्ति के उपाय" विषय पर प्रशिक्षण दिया। इस प्रशिक्षण कार्यशाला में संस्थान के कुल 11 अधिकारियों और 34 कर्मचारियों ने भाग लिया। संस्थान में यह इस वित्तीय वर्ष की पहली कार्यशाला थी, जिसमें संस्थान के महानिदेशक महोदय, डॉ. मोहम्मद रिहान जी ने स्वयं भाग लिया और उपस्थित सभी कार्मिकों को हिन्दी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया।

संस्थान में आयोजित पूर्ण दिवसीय हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला में प्रशिक्षक को स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए महानिदेशक, डॉ. मोहम्मद रिहान।

संस्थान में आयोजित पूर्ण दिवसीय हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए प्रशिक्षक महोदय।

राष्ट्रीय सौर ऊर्जा संस्थान में वित्तीय वर्ष के हिन्दी पखवाडे. के दौरान दिनांक १७/०९/२०२४ को आयोजित की गई। इस कार्यशाला में प्रशिक्षक महोदय ने दैनिक कार्यालयीन कार्यों में हिन्दी राजभाषा के उपयोग के बारे में चर्चा की। इनका विषय था 'राजभाषा - प्रयोग, हिन्दी वर्तनी और पारीभाषिक प्रशासनिक शब्दावली'।

संस्थान में आयोजित पूर्ण दिवसीय हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला में सभा को संबोधित करने उपनिदेशक, श्री सन्दीप सहरावत

संस्थान में आयोजित पूर्ण दिवसीय हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला में संस्थान के उपमहानिदेशक, डॉ. अवधेश यादव

दिनांक १७/०३/२०२५ को राष्ट्रीय सौर ऊर्जा संस्थान के उषा प्रशिक्षण कक्ष में कार्मिकों हेतु एक पूर्ण दिवसीय हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण कार्यशाला में संस्थान के कुल ४० कार्मिकों ने भाग लिया।

संस्थान में आयोजित हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला में प्रतिभागियों को संबोधित करते प्रशिक्षक महोदय।

संस्थान में आयोजित हिन्दी प्रशिक्षण कार्यशाला में प्रतिभागियों को संबोधित करते महानिदेशक, डॉ. मोहम्मद रिहान।

अंत में संस्थान की ओर से धन्यवाद ज्ञापित व्यक्त करते हुए महानिदेशक महोदय, डॉ. मोहम्मद रिहान द्वारा प्रशिक्षकों को संस्थान की ओर से एक स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। साथ ही उन्होंने कहा कि अपने कार्यालय में हिन्दी भाषा में कार्य करने में कठिनाइयों को दूर करने के लिए कार्यशालाएं निरंतर आयोजित करने की जाती हैं। इन कार्यशालाओं में मुख्य रूप से सरकारी काम हिन्दी में किए जा रहे अभ्यास करवाया जाता है। इस प्रकार के आयोजनों के लिए संस्थान का हिन्दी अनुभाग बधाई का पत्र है।

गुल्लक

कभी किताबो के पीछे
कभी बिस्तर के नीचे
तो कभी कपडो के बीच
अपने पैसे की कमजोरी को ऐसा संभाल दिया करता था
गुल्लक जिन्दगी थी मेरी मैं हद से ज्यादा प्यार करता था |
जब होने लगती थी खन खन ज्यादा
तभी समझ जाता था कि पैसा हो गया है आधा
घरवाले और रिश्तेदारों के सब काम करना शुरू करता था
कोई ना कोई तो मुस्कुरा कर 10 रुपये हाथ में रख देता था
वो जेब ख़र्ची की मिलने वाली ख़ुशी मैं भाग कर इसमें भर दिया करता था
गुल्लक जिन्दगी थी मेरी मैं हद से ज्यादा प्यार करता था |
कभी यारों के लिए उपहार
तो कभी बहन भाई के लिए प्यार
बीत जाते थे गुल्लक से ना जाने कितने त्यौहार
सबको खुश करने के लिए
मैं अपने पैसे खर्च कर दिया करता था
गुल्लक जिन्दगी थी मेरी मैं हद से ज्यादा प्यार करता था |
किर धीरे-धीरे ज़रूरत कम पढ़ने लगे
क्योंकि हाथों में पैसे की आदत ज्यादा लगने लगी
आज भी गुल्लक भरी हुई है
लेकिन पैसे से कम और यादों से ज़्यादा
कुछ खट्टी, कुछ मीठी
कुछ अटपटी यादें
आज भी जब कोई नया किस्सा याद आता है तो उसमें भर दिया करता हूँ
गुल्लक जिन्दगी थी मेरी मैं हद से ज्यादा प्यार करता हूँ |

धीरज विरमानी
लेखा अधिकारी-II
इंडियनऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड
गुरुग्राम मंडल कार्यालय

जीवन में नारी का संतुलन

जीवन की पहली सीढी का रास्ता ही नारी है।
फिर भी यह अबला क्यों इतनी बेचारी है।
कौन कहता है कि
नारी कमजोर होती है।।
आज भी उसके हाथों में
अपने घर-परिवार को चलाने की शक्ति होती है।।
वो तो दफ्तर भी जाती है साथ ही साथ पूरे घर को भी संभालती है
फिर भी क्यों वो इतनी मजबूर होती है।।
नारी तुम तो आत्मविश्वास और आत्म सम्मान की वो डोर हो
जिसको जितना भी खींचा जाए वो कभी भी कमजोर न हो।।
ईश्वर ने तुम्हें अनेकों रूपों मे बांटा
कभी किसी की माता, बहन, बेटी, बहू एवं पत्नी के रूप में समझा।।
तुम ही दुर्गा, सरस्वती और लक्ष्मी की मूरत हो।
तुम ही से मिलता है प्यार, स्नेह और त्याग से भरा हुआ दामन
फिर भी तुम्हें क्यों नहीं मिलता हैं इस जहां से अपनापन।।
तुम ही हो माता का मान
तुम ही हो पिता का सम्मान
तुम ही हो अपने बच्चों की जान
तुम ही हो देश की शान
फिर क्यों नहीं समझा जाता है तुम्हें पति का अभिमान।।
तू बन ऐसी वीरांगना जो मरकर भी आज जीवित है।
तू बन झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, या तू बन चित्तौड़ की रानी पद्मावती
अनेको नाम है तेरी जैसी महान वीरांगना के
अब आया है कि अपनी बुलंद आवाज को तू उठा ले।।
तू बढती रह और बिना किसी रुकावट के
तू हासिल करती रहे अपने मुकामों को पूरी ताकत से।
जीवन की कठिन परिस्थितियों को संभालने का दूसरा नाम है नारी
फिर भी यह क्यों हो जाती है अबला बेचारी।।
अनेकों सपने लेकर लिया था जिसने धरती पर जन्म
आज वक़त है कि चले हम उसके साथ कदम से कदम ।।

सृष्टि
कनिष्ठ सहायक ग्रेड-2 (राजभाषा विभाग)
ईआईएल, गुरुग्राम

भाषा और हम

भाषा केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, विचारधारा, और पहचान का अभिन्न हिस्सा है। यह न केवल हमारे विचारों को व्यक्त करने का माध्यम है, बल्कि समाज और सभ्यता को जोड़ने का सबसे शक्तिशाली माध्यम भी है।

भाषा की परिभाषा:

भाषा विचारों, भावनाओं और सूचनाओं को व्यक्त करने का वह माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों को दूसरों तक पहुँचाता है। यह ध्वनियों, शब्दों और वाक्यों के रूप में व्यवस्थित एक प्रणाली है, जो समाज में संवाद स्थापित करने का प्रमुख साधन है।

भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है, बल्कि यह संस्कृति, परंपरा, और ज्ञान का वाहक भी होती है। भाषा के माध्यम से हम अपने अनुभवों और विचारों को व्यक्त करते हैं और दूसरों के साथ भावनात्मक और सामाजिक संबंध बनाते हैं।

विशेषताएँ:

१. **सामाजिक माध्यम**: भाषा समाज में संवाद और संपर्क के लिए उपयोग की जाती है।
२. **प्राकृतिक गुण**: भाषा स्वाभाविक रूप से सीखने और विकसित होने वाली प्रणाली है।
३. **ध्वनि पर आधारित**: अधिकांश भाषाएँ ध्वनियों के आधार पर निर्मित होती हैं।
४. **लिखित और मौखिक रूप**: भाषा के दोनों रूपों का उपयोग होता है।

उदाहरण: हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत, आदि भाषाएँ मानव जीवन के संवाद का आधार हैं।

भाषा का विकास और इतिहास

भाषा मानव सभ्यता की सबसे अनूठी और जटिल उपलब्धियों में से एक है। यह समय के साथ विकसित हुई और विभिन्न सांस्कृतिक, सामाजिक, और भौगोलिक कारकों के प्रभाव से अलग-अलग रूपों में विकसित होती रही।

भाषा का विकास

भाषा का विकास मनुष्य के सामाजिक और मानसिक विकास के साथ जुड़ा हुआ है। यह विकास निम्नलिखित चरणों में समझा जा सकता है

1. ध्वन्यात्मक चरण (Phonetic Stage):

- प्रारंभ में, मनुष्य ने अपनी भावनाओं और ज़रूरतों को व्यक्त करने के लिए ध्वनियों और संकेतों का उपयोग किया।
- ये ध्वनियाँ अक्सर प्राकृतिक ध्वनियों की नकल पर आधारित होती थीं, जैसे जानवरों की आवाज़ें।

2. शब्द निर्माण चरण (Word Formation Stage):

- धीरे-धीरे ध्वनियाँ संगठित होकर अर्थपूर्ण शब्दों में बदल गईं।
- इस चरण में संज्ञा, क्रिया, और विशेषण जैसे शब्दों का उपयोग शुरू हुआ।

3. वाक्य संरचना का विकास (Sentence Structure Development):

- शब्दों को व्यवस्थित करके वाक्य बनाए गए।
- इससे अधिक जटिल और स्पष्ट संवाद संभव हुआ।

4. लिखित भाषा का आविष्कार (Invention of Written Language):

- भाषा के विकास में लिखित रूप का आविष्कार एक महत्वपूर्ण कदम था।
- प्राचीन सभ्यताओं ने चित्रलिपि, धातु और पत्थरों पर खुदाई, और कागज पर लेखन की शुरुआत की।

भाषा का इतिहास

भाषा के इतिहास को तीनों कालों में विभाजित किया गया है।

1. प्राचीन भाषाएँ:

- संस्कृत, तमिल, लैटिन, और ग्रीक जैसी भाषाएँ प्राचीन काल की समृद्ध भाषाएँ हैं।
- ये भाषाएँ धर्म, दर्शन, और साहित्य के प्रसार में प्रमुख रहीं।

2. मध्यकालीन भाषाएँ:

- मध्यकाल में भाषाओं में क्षेत्रीय और सांस्कृतिक विविधता बढ़ी।
- हिंदी, उर्दू, बंगाली, और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का विकास इसी काल में हुआ।

3. आधुनिक भाषाएँ:

- आधुनिक युग में भाषाएँ तकनीकी और वैश्विक प्रभावों से प्रभावित हुईं।
- अंग्रेजी जैसी भाषाएँ वैश्विक स्तर पर संवाद का माध्यम बन गईं।

भाषा की वर्तमान स्थिति

वर्तमान समय में, भाषा की स्थिति और उपयोग में कई महत्वपूर्ण बदलाव देखने को मिल रहे हैं। इन बदलावों को वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति, और समाज में हो रहे परिवर्तनों से प्रभावित कहा जा सकता है।

1. वैश्वीकरण और भाषाओं का प्रभाव

- **अंग्रेजी का बढ़ता प्रभाव:**
  वैश्वीकरण के कारण अंग्रेजी एक वैश्विक भाषा के रूप में उभरी है। यह व्यापार, शिक्षा, और तकनीकी संवाद में प्रमुख भूमिका निभा रही है।
- **स्थानीय भाषाओं पर दबाव:**
  अंग्रेजी और अन्य वैश्विक भाषाओं के बढ़ते प्रभाव के कारण कई स्थानीय और क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग घट रहा है।
- **संस्कृतियों का आदान-प्रदान:**
  भाषाओं के माध्यम से विभिन्न संस्कृतियों का प्रभाव बढ़ा है, जिससे भाषाओं में नए शब्द और शैलियाँ जुड़ रही हैं।

2. तकनीकी युग और भाषा

- **डिजिटल भाषा का विकास:**
  इंटरनेट और सोशल मीडिया के कारण भाषा का स्वरूप बदल गया है।
  - शॉर्टकट और संक्षिप्त शब्दों का प्रयोग बढ़ा है।
  - इमोजी और GIF जैसे दृश्य माध्यम संवाद का हिस्सा बन गए हैं।
- **मशीन अनुवाद और एआई का प्रभाव:**
  तकनीकी प्रगति के कारण भाषाओं का अनुवाद और समझना आसान हो गया है।
  - गूगल ट्रांसलेट और एआई आधारित टूल्स भाषाओं की सीमाओं को कम कर रहे हैं।
  - यह सुविधा भाषाओं को संरक्षित रखने में मददगार साबित हो रही है।

3. क्षेत्रीय भाषाओं की स्थिति

- **संरक्षण का प्रयास:**
  कई सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएँ क्षेत्रीय भाषाओं को संरक्षित करने के प्रयास कर रही हैं।
  - शिक्षा और साहित्य के माध्यम से भाषाओं को पुनर्जीवित किया जा रहा है।
- **अस्तित्व का संघर्ष:**
  कुछ भाषाएँ विलुप्त होने की कगार पर हैं क्योंकि नई पीढ़ियाँ अपनी मातृभाषा के बजाय वैश्विक भाषाएँ (जैसे अंग्रेजी) सीखने को प्राथमिकता दे रही हैं।

4. सामाजिक बदलाव और भाषा

- **मिश्रित भाषाएँ:**
  हिंग्लिश (हिंदी + इंग्लिश) और तंग्लिश (तमिल + इंग्लिश) जैसी भाषाई मिश्रण लोकप्रिय हो रहे हैं।
- **लिंग और समानता:**
  भाषा में लिंग-संवेदनशीलता बढ़ रही है। लोग अब लैंगिक समानता को ध्यान में रखकर शब्दों का चयन कर रहे हैं।
  - उदाहरण: "चेयरमैन" की जगह "चेयरपर्सन"।

5. भाषा और शिक्षा

- **बहुभाषी शिक्षा:**
  नई शिक्षा नीति (NEP) के तहत प्राथमिक शिक्षा में मातृभाषा के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- **ऑनलाइन शिक्षा:**
  डिजिटल शिक्षा के माध्यम से अध्येता अब विभिन्न भाषाओं में ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

हमारी ज़िम्मेदारी

भाषा को संरक्षित करना और उसका विकास करना हमारी ज़िम्मेदारी है। हमें अपनी मातृभाषा का सम्मान करना चाहिए और इसे अगली पीढ़ी तक पहुँचाना चाहिए। साथ ही, अन्य भाषाओं के प्रति भी आदर रखना चाहिए।

'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।'

(अर्थ- भारतेन्दु ने विदेशी भाषा विशेष रूप से अंग्रेज़ी में अंधाधुंध उपयोग पर चिंता व्यक्त की है और मातृभाषा के विकास पर जोर दिया।)

- **भारतेन्दु हरिश्चंद्र (भारत दुर्दशा)**

भाषा और हम का रिश्ता ऐसा है जैसे नदी और उसका किनारा। भाषा के बिना हमारा अस्तित्व अधूरा है। इसे सहेजना, विकसित करना और इसके महत्व को समझना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

रवि कांत प्रसाद
हिंदी सहायक
राइट्स, उत्तरी क्षेत्र परियोजना कार्यालय, गुरुग्राम

नैमिषारण्य की शाम का अहसास

नैमिषारण्य की पावन भूमि, जहाँ हवाओं में शंखों की गूँज और गोमती के तट पर शांति का वास है, वहाँ 78 वर्षीय रमन अपने घर की ढलती हुई परछाइयों को देख रहे थे। बाहर चक्रतीर्थ के दर्शन कर लौटते श्रद्धालुओं का उत्साह था, पर रमन के भीतर एक अजीब सा सन्नाटा पसरा था। उनके पास रहने के लिए एक सुंदर आशियाना था, साथ में उनकी जीवनसंगिनी मोनिका का हाथ था और बैंक में इतना धन कि अगली कई पीढ़ियां आराम से काट लें।

लेकिन, जैसे-जैसे सूरज क्षितिज के नीचे डूब रहा था, रमन के मन में स्मृतियों का एक तूफान उठ खड़ा हुआ। उन्हें अहसास हुआ कि जीवन भर 'कल' को सुरक्षित करने की होड़ में, उन्होंने अपना 'आज' कहीं बहुत पीछे छोड़ दिया है।

वह अपनी पेंशन की राशि से उन सुनहरे वर्षों को वापस नहीं खरीद सकते थे जो उन्होंने दफ्तर की फाइलों और अतिरिक्त बचत के चक्कर में गंवा दिए थे।

यह कहानी उन पाँच महत्वपूर्ण बिन्दु की है, जो रमन को नैमिषारण्य के इस शांत एकांत में अक्सर सोने नहीं देतीं—वे पछतावे, जो आज की पीढ़ी के लिए एक बड़ी सीख बन सकते हैं।

1. "एक और साल" की भारी कीमत

रमण ने चालीस साल एक ही फर्म में काम किया था। उन्हें अपना 62 साल वाला वह रूप याद आया, जब उनके पास रिटायर होने के लिए पर्याप्त बचत थी। लेकिन थोड़ी और ज्यादा पेंशन के लालच में उन्होंने 68 साल की उम्र तक काम किया। आज उन्हें अहसास हुआ कि उन्होंने अपनी ऊर्जा से भरे हुए बेहतरीन 6 साल एक ऐसे बैंक बैलेंस के लिए बेच दिए, जिसे खर्च करने का तरीका भी उन्हें नहीं पता था। उन्हें पछतावा था कि वे जल्दी रिटायर क्यों नहीं हुए, तब जब उनके घुटनों में दर्द नहीं था और उनमें दुनिया देखने का जोश बाकी था।

2. खुशियों को कल पर टालने की भूल

रमन ने अपनी बैंक की पासबुक देखी। पैसा तो बहुत था, लेकिन अब वह सिर्फ एक संख्या बनकर रह गया था। वे और उनकी पत्नी मोनिका हमेशा सोचते थे, "एक बार जिम्मेदारियां पूरी हो जाएं, फिर खुल कर जिएंगे।" अब मोनिका की बिगड़ती सेहत के कारण वे लंबी यात्राओं के बारे में सोच भी नहीं सकते थे। उन्हें दुख था कि उन्होंने अपनी बचत का एक हिस्सा तब क्यों नहीं खर्च किया जब वे दोनों जवान थे और उन पलों का आनंद ले सकते थे।

3. शरीर का खामोश विरोध

रमन पानी का गिलास लेने के लिए उठने लगे, तो उनके जोड़ों के दर्द ने उन्हें फिर से बैठने पर मजबूर कर दिया। उन्हें वे दिन याद आए जब उन्होंने काम के चक्कर में अपनी सेहत, कसरत और खान-पान को पूरी तरह नजरअंदाज कर दिया था। उन्हें वे दशक याद आया जब उन्होंने जिम जाने के बजाय दफ्तर की मेज पर बैठे रहना चुना था और बाहर का खाना जरूरत से ज्यादा खाया था। यह उनका सेहत को लेकर सबसे बड़ा पछतावा था। उन्हें समझ आया कि आज उनके पास नैमिषारण्य की सुंदर परिक्रमा करने का समय तो है, लेकिन उनके पैर अब उनका साथ नहीं देते। यह उनका सेहत को लेकर सबसे बड़ा अफसोस था।

4. खाली हाथों का सन्नाटा

नैमिषारण्य के इस शांत घर में अक्सर सन्नाटा छाया रहता था। रमन को अहसास हुआ कि जीवन भर काम के पीछे भागते हुए उन्होंने कोई हॉबी या शौक विकसित ही नहीं किया। वे इतने सालों तक सिर्फ "मैनेजर रमन" बनकर रहे कि उन्हें पता ही नहीं चला कि "पेंटर रमन" या "लेखक रमन" कैसे बना जाता है। उन्होंने अपने पड़ोसी को लकड़ी का घर बनाते देखा और उन्हें जलन महसूस हुई। बिना किसी शौक के, रिटायरमेंट अब एक इनाम नहीं, बल्कि एक लंबा इंतजार लगने लगा था। उन्हें लगा कि एक शौक उनके बुढ़ापे को कहीं अधिक जीवंत बना सकता था।

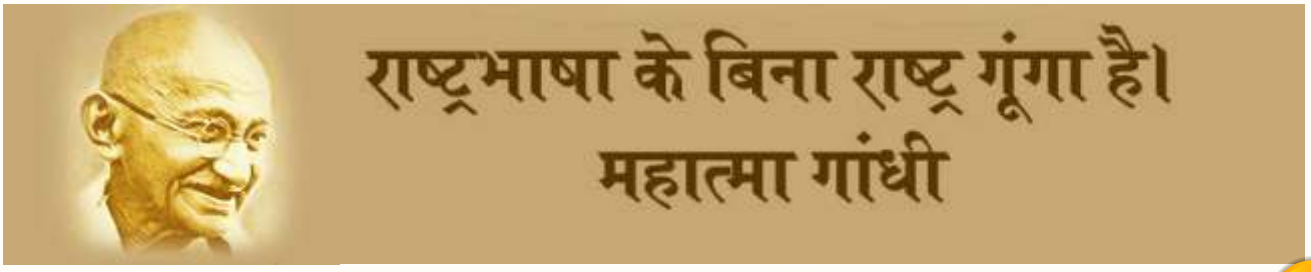

5. अधूरी यात्राएँ

बगल की मेज पर तीर्थस्थलों और विदेशों के नक्शे पड़े थे। अब उनके पास समय की कोई कमी नहीं थी और न ही धन की, लेकिन मोनिका और उनकी शारीरिक अक्षमता ने दुनिया देखने के उन सपनों पर विराम लगा दिया था। रमन को समझ आया कि सही समय पर यात्रा करना कितना जरूरी है, क्योंकि बुढ़ापे में सुविधाएं तो खरीदी जा सकती हैं, लेकिन उन जगहों को महसूस करने वाली हिम्मत नहीं।

यह कहानी हमें सिखाती है कि वक्त और सेहत का सही तालमेल ही असली रिटायरमेंट है।

मुख्य सीख

रमन की कहानी एक कड़वा सच बयां करती है: रिटायरमेंट में सबसे कीमती पूंजी पैसा नहीं, बल्कि सेहत और समय है।

"हम अपनी जवानी सेहत को बेचकर पैसा कमाने में लगा देते हैं, और बुढ़ापे में उसी पैसे को अपनी सेहत वापस पाने के लिए खर्च कर देते हैं।"

रमन और मोनिका की कहानी हमें सिखाती है कि नैमिषारण्य जैसी पवित्र और शांत जगह पर होने के बावजूद, असली शांति तभी मिलती है जब हम समय रहते अपनी खुशियों और सेहत में निवेश करते हैं। असल मे यही हैं हमारे जीवन जीने का सार।

चक्षु राजा
कनिष्ठ सहायक (वित्त)
वाप्कोस लिमिटेड

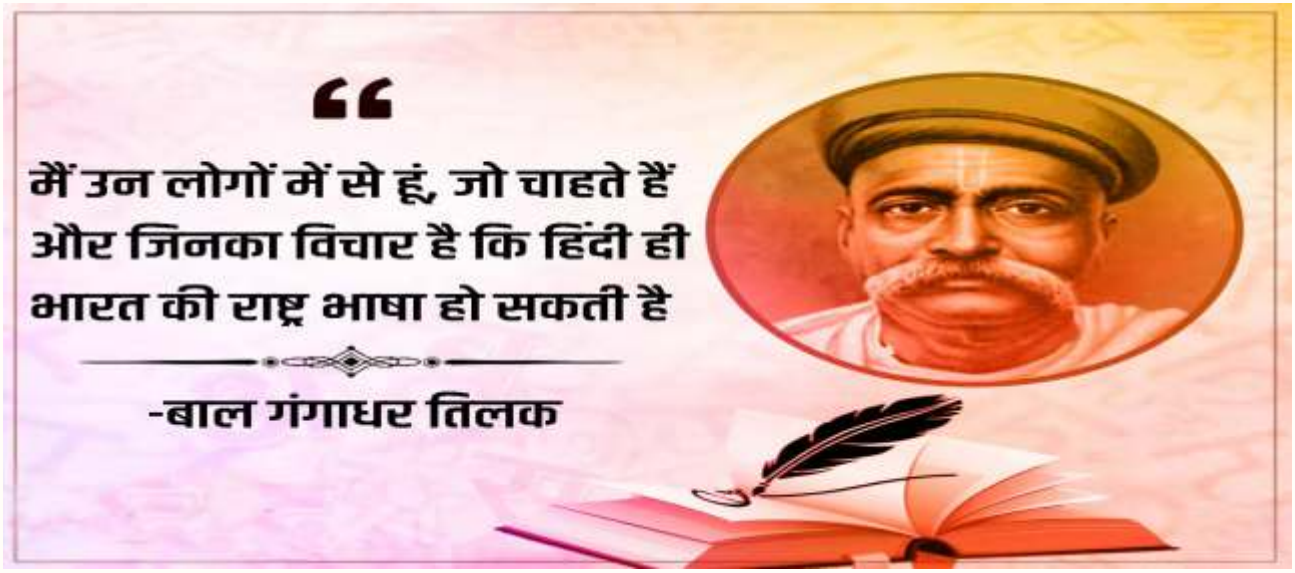

गज़ल

ज़िंदगी ज़िंदगी नहीं होती,
तुझ से गर दोस्ती नहीं होती।।

दिल भी मेरा उदास रहता तब,
चेहरे पर भी खुशी नहीं होती।।

इश्क़ का चाँद दिल में रौशन है,
फिर भी क्यूँ रौशनी नही होती ।।

रोज़ ही उस खुदा से लड़ते हैं ,
मुझ से अब बंदगी नहीं होती।।

चाँद निकला तो है अमावस में,
जाने क्यों चांदनी नहीं होती।।

जो कसक है न हम करें महसूस,
दिल से फिर शायरी नही होती।।

रूह ने इश्क़ तो किया है मगर,
उससे क्यूँ आशिकी नही होती।।

सारी उम्र निभाए रिश्ते,
अपने और पराये रिश्ते।।

हमने कितना चाहा लेकिन,
दिल से कब जुड़ पाए रिश्ते।।

पहले उसने समझा सबको ,
फ़िर उसने सुलझाए रिश्ते।।

प्यार से गर सींचा था तुमने,
कैसे फ़िर मुरझाए रिश्ते।।

सच्चे थे जो दिल से ए रूह,
उनसे ही निभ पाए रिश्ते।।

श्रीमती शगुन
एन पी सी सी लिमिटेड

वाप्कोस गुरुग्राम कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी वाप्कोस के गुरूग्राम कार्यालय में दिनांक 14 सितम्बर से 29 सितम्बर 2025 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन हर्षोल्लास के साथ किया गया। इस दौरान, विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे हिन्दी निबंध प्रतियोगिता, चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता, राजभाषा नीति-ज्ञान प्रतियोगिता तथा श्रुतलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। इस दौरान, आयोजित प्रतियोगिताओं की कुछ झलकियां इस प्रकार हैं:-

निबंध प्रतियोगिता

चित्र अभिव्यक्ति प्रतियोगिता

राजभाषा नीति-ज्ञान प्रतियोगिता

श्रुतलेख प्रतियोगिता

कठोरतम संदेश यही है

कठोरतम संदेश यही है
कि सुधर जाओ या
सिधर जाओगे।
ज्ञात भी न होगा किसी को
कि
कब, कैसे
और किधर जाओगे।

चेता दिया था पहले ही, कि अकल्पनीय वार होगा,
आंगन में ही तुम्हारे लिए श्मशान तैयार होगा।
अब विचारते रहो,
यमपाश से बचकर
किधर जाओगे।

कठोरतम संदेश यही है
कि सुधर जाओ या
सिधर जाओगे।

कहा था तुमने,
जिसे बताने को,
सुनते ही वह,
चढ़ बैठा सीने पर ,
धरा से तुम्हें मिटाने को।
उसने,
सबक तुम्हे वो सिखा दिया है कि
भविष्य में किसी माँ,बहन या बेटी के सिंदूर पर कुदृष्टि डालते ही मर जाओगे।

कठोरतम संदेश यही है
कि सुधर जाओ या
सिधर जाओगे।

सतवीर
स्नातक शिक्षक गणित
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय क्रमांक 1 गुड़गांव

एन पी सी सी केंद्रीय कार्यालय की गतिविधियां

एन पी सी सी केंद्रीय कार्यालय मे नियमित रूप से राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया। समिति का मुख्य उद्देश्य कार्यालय में हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग की स्थिति की समीक्षा करना है। बैठकों में केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित वार्षिक राजभाषा कार्यक्रम के अंतर्गत किए गए कार्यों की प्रगति की जांच की गई इसके अलावा कार्यालय में राजभाषा अधिनियम, 1963 एवं राजभाषा नियम, 1976 के पालन की स्थिति पर चर्चा , नोटशीट, पत्राचार, फाइलें, रजिस्टर, फॉर्म, कम्प्यूटर आदि में हिंदी प्रयोग बढ़ाने हेतु सुझाव, हिंदी प्रयोग में आ रही व्यावहारिक कठिनाइयों की पहचान करना तथा उनके समाधान हेतु उपाय, हिंदी प्रयोग में आ रही व्यावहारिक कठिनाइयों की पहचान करना उनके समाधान आदि विषयों पर चर्चा की गई।

(राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 09.08.2024)

(राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 02.05.2024)

(राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक 26.12.2024)

हिंदी कार्यशाला

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार कार्यालय के दैनिक कामकाज में राजभाषा को बढ़ावा देने के लिए एन पी सी सी केंद्रीय कार्यालय में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु समय-समय पर हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना आवश्यक है। इन कार्यशालाओं का उद्देश्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने हेतु आवश्यक ज्ञान एवं कौशल प्रदान करना है तथा कर्मचारियों को कार्यालयी कार्य में हिंदी के प्रयोग हेतु प्रशिक्षित करना ,हिंदी टाइपिंग एवं कंप्यूटर पर हिंदी सॉफ्टवेयर के प्रयोग में दक्षता बढ़ाना, सरकारी पत्राचार, रिपोर्ट, नोटशीट, प्रपत्र आदि हिंदी में तैयार करने की क्षमता विकसित करना।, राजभाषा नियमों एवं वार्षिक कार्यक्रम की जानकारी प्रदान करना है।

(हिंदी कार्यशाला 26.06.2024)

(हिंदी कार्यशाला 20.11.2024)

(हिंदी कार्यशाला 20.11.2024)

अखिल भारतीय राजभाषा समेलन

14/09/2024-14/09-2024 को भारत मंडपम मे आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा समेलन का आयोजन माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी की अध्यक्षता में किया गया। एन पी सी सी से श्रीमती जैसमीन धर सिंह, महा प्रबंधक (मा. संसा) एवं श्रीमती शगुन , उप महा प्रबंधक (मा संसा) ने भाग लिया । इस कार्यक्रम में पूरे देश से लगभग दस हजार राजभाषा के प्रतिनिधियों ने भाग लिया

हिंदी पखवाड़ा

एन पी सी सी में अध्यक्ष एवम प्रबन्ध निदेशक के मार्गदर्शन में 14.09.2024 से 27.09.2024 तक हिन्दी पखवाड़ा मनाया गया। हिंदी पखवाड़े के अवसर पर एन पी सी सी के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रोत्साहित करने के लिए अध्यक्ष एवम प्रबन्ध निदेशक महोदय की ओर से एक "सन्देश" जारी किया गया।

कम्पनी के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध किया गया कि वे अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करें ताकि भविष्य में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कम्पनी में अनुकूल वातावरण बनाया जा सके। हिन्दी पखवाड़े के दौरान निम्नलिखित प्रतियोगिताएं आयोजित की गई:-

- हिंदी प्रश्नोंतरी प्रतियोगिता (18/09/2024)
- हिंदी राजभाषा ज्ञान प्रश्नोंतरी प्रतियोगिता (18/09/2024)
- हिंदी कार्यशाला (20/09/2024)

उक्त प्रतियोगिताओं में अधिकारियों /कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इन अवसरों पर श्रीमती शक्ति शर्मा, एस टी ओ , सेंट्रल बोर्ड ऑफ सेकन्डेरी एजुकेशन से मार्गदर्शन/उत्तर पुस्तिकाओं की जांच के लिए आमंत्रित किया गया।

हिंदी पखवाड़े के दौरान दिनांक 24 .09.2024 को एन पी सी सी में हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस हिंदी कार्यशाला में श्री नितेश कुमार वर्मा, Protection of Plant Varieties & Farmer's Rights Authority, DoFW , Ministry of Agriculture & Farmer's Welfare, New Delhi को आमंत्रित किया गया जिन्होंने कार्यशाला में उपस्थित सभी कार्मिकों को राजभाषा नियमों व अधिनियमों की जानकारी दी तथा आई टी टूल्स का प्रशिक्षण भी दिया। इसके साथ-साथ उन्होंने कार्मिकों को गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के वर्ष 2024 -25 के वार्षिक कार्यक्रम में दिये गए निर्धारित लक्ष्यों के बारे में बताया।

(राजभाषा ज्ञान प्रश्नोंतरी प्रतियोगिता 20/09/2024)

(राजभाषा ज्ञान प्रश्नोंतरी प्रतियोगिता 20/09/2024)

(हिंदी राजभाषा ज्ञान प्रश्नोंतरी प्रतियोगिता 20/09/2024)

संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा निरीक्षण - साउथ ईस्टर्न क्षेत्रीय कार्यालय भुवनेश्वर कार्यालय एन पी सी सी का राजभाषायी निरीक्षण किया गया। इस समिति का उदेश्य -

केंद्र सरकार द्वारा समय-समय पर जारी राजभाषा संबंधी नीतियों, आदेशों एवं वार्षिक कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की स्थिति की समीक्षा करना।

हिंदी के प्रगतिशील प्रयोग को बढ़ावा देना

- मंत्रालयों/कार्यालयों में प्रशासनिक कार्य, पत्राचार, नोटशीट, रजिस्टर, फॉर्म, स्टेशनरी, आईटी प्लेटफ़ॉर्म आदि में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना।

कमियों की पहचान एवं सुधार के सुझाव

- निरीक्षण के दौरान कमियों की पहचान कर, उनके निवारण के लिए ठोस सुझाव देना, ताकि हिंदी के प्रयोग का प्रतिशत एवं गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

सुविचार

यदि भगवान है तो
वह मेरा मूल्यांकन मेरे कर्मो से करेगा
न कि इस बात से कि मैंने उसकी भक्ति में कितना वक़्त गुजारा

सिर्फ उतना ही विनम्र बनो
जितना जरूरी हो, बेवजह की
विनम्रता दुसरो के अहम् को बढ़ावा देती है

आप जिस पर ध्यान देना छोड़ देंगे
उसका नष्ट होना स्वाभाविक है
फिर चाहे वह स्वास्थ्य हो ,धन हो
व्यापार हो या कोई रिश्ता

लोगों की निंदा से परेशान होकर
अपना रास्ता ना बदलना
क्योंकि सफलता शर्म से नहीं
साहस से मिलती हैं

व्यावहारिक विवेक का होना
शिक्षित होने से हजार गुना बेहतर है

सीमा कपूर
सामाजिक सुरक्षा अधिकारी
उप क्षेत्रीय कार्यालय गुरुग्राम
क.रा.बी. निगम

समय प्रबंधन

-सतीश कुमार सोलंकी
प्रबंधक (राजभाषा)
इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड

समय प्रबंधन से तात्पर्य विभिन्न कार्यों को उनकी प्राथमिकता और महत्व के आधार पर उनको क्रम से व्यवस्थित करके अपने समय का कुशलतापूर्वक सदुपयोग करने से है और यह तभी हो सकता है जब हम समय का महत्व समझे। इस बारे में कई कहावतें आपने सुनी होगी जैसे बीता समय कभी वापस नहीं आता है, सांप निकल गया अब लाठी पीटने से क्या फायदा, समय किसी का भी इंतजार नहीं करता अथवा समय बड़ा बलवान होता है..... इत्यादि। ये सभी कहावतें समय का महत्व बताती हैं। समय प्रबंधन सुनने और बोलने में जितना आसान लगता है उतना होता नहीं। यह सत्य है कि सफलता के प्रमुख सौंपानों में कठिन परिश्रम और दृढ़ निश्चय आते हैं परंतु समय का प्रबंधन अथवा समय का सदुपयोग करने का महत्व भी इन दोनों सौंपानों से किसी भी दृष्टि से कम नहीं होता है और जिसने समय का महत्व समझ लिया उसके लिए कोई भी लक्ष्य कठिन और असंभव नहीं होता है। वह हर लक्ष्य में सफलता प्राप्त करता है।

ऐसा कहा जाता है कि सफलता की दिशा में पहला कदम कुशल समय प्रबंधन है। जो अपने समय को ठीक से व्यवस्था नहीं कर सकता वह हर चीज में विफल हो जाता है। कुशल समय प्रबंधन आपके कार्य-निष्पादन (परफोर्मेंस) को बढ़ाता है, काम की गुणवत्ता सुधारता है और तनाव कम करने में भी मदद करता है। बेंजामिन फ्रैंकलिन ने मत व्यक्त किया था कि "समय पैसा है" और वह मत व्यापारिक दुनिया का मंत्र बन गया क्योंकि उनका मानना था कि आप रूक सकते हैं लेकिन समय नहीं रूकता तथा खोया समय कभी दोबारा नहीं मिलता। मेरे विचार में समय तो पैसे से भी बहुमुल्य

हैं क्योंकि पैसा अर्जित किया जा सकता है, संचित किया जा सकता हैं, उसमें वृद्धि की जा सकती है परंतु पैसे से समय को खरीदा नहीं जा सकता, उसे अर्जित नहीं किया जा सकता, उसे संचित नहीं किया जा सकता और न ही उसमें विस्तार किया जा सकता है। केवल उसका सदुपयोग किया जा सकता है। यह मूल मंत्र याद रखो कि जो कार्य आज किया जा सकता है उसे कल पर मत छोड़ों, क्योंकि वो कल अर्थात् समय फिर कभी नहीं आता है।

प्रत्येक व्यक्ति के लिए समय प्रबंधन महत्वपूर्ण है चाहे आप एक पेशेवर हैं, छात्र है, गृहिणी है, कार्यालय में अधिकारी/कर्मचारी है अथवा अन्य किसी क्षेत्र में संलग्न है- यदि आप अपने समय को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने में सक्षम हैं तो आप अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने से पीछे नहीं रहेंगे। समय प्रबंधन का प्रमुख महत्व निम्नलिखित रूप में माना जा सकता है।

- लक्षित कार्य आसानी से समय पर पूरा हो जाता है।
- आपकी निष्पादनता (परफोर्मेंस) को बढ़ाता है।
- काम की गुणवत्ता सुधारता है।
- तनाव कम करने में भी मदद करता है।
- कम परिश्रम करने से अधिक परिणाम प्राप्त होते हैं।
- मन एवं शरीर स्वस्थ रहता है।
- कोई भी कार्य अथवा लक्ष्य कठिन नहीं लगता है अपितु यह आपको कठिन कार्य करने के लिए प्रेरित भी करता है।
- सही निर्णय लेने में मदद मिलती है और इसमें आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।
- समय प्रबंधन हमारे व्यावसायिक और निजी जीवन में संतुलन और सामंजस्य लाता है।

समय प्रबंधन का उपर्युक्त महत्व तो हमने समझ लिया परंतु अब प्रश्न है कि इसे अमल में कैसे लाया जाए। नीचे कुछ महत्वपूर्ण उपाय/तरीके दिए गए हैं जिनको अपनाकर हम इसमे सफलता प्राप्त कर सकते हैं। परंतु इन उपायों/तरीकों को अमल में लाने के लिए हमें आत्म-अनुशासन को अपनाना अनिवार्य है इसके बिना इसमें हम पूरी तरह से सफल नहीं हो सकतेः

- दैनिक कार्यों की एक सूची तैयार करें।
- विवेकपूर्ण अपने कार्यों को प्राथमिकता दें और अच्छा रहेगा यदि आप इन कार्यों का समय निर्धारण भी कर लें। यदि अपेक्षित हो तो प्राथमिकता का पुनः निर्धारण भी कर सकते हैं।
- प्रत्येक कार्य के बीच कुछ ब्रेक/अंतराल रखें।
- किए गए कार्यों की समीक्षा/मूल्यांकन करें और पाई गई कमियों को अगले कार्यों में दूर करें और सदैव गुणवत्ता को महत्व दें।
- यदि कोई कार्य पूरा न हो पाए तो हताश न हो बल्कि शांतिपूर्वक उसे पूरा करने का प्रयास करें।
- सामूहिक कार्यों में टीम भावना से कार्य करें।

- यदि आपके अधीनस्थ अच्छा कार्य करते हैं तो उन्हें श्रेय अवश्य दें और इसका मनोबल बढ़ाएं।
- समय प्रबंधन करते समय अपने स्वास्थ्य के लिए भी कुछ समय अवश्य निर्धारित करें।
- सिर्फ श्रेय लेने की भावना न रखें।
- किसी भी कार्य को पूरा करने में जल्दबाजी या हड़बड़ाहट ना करें बल्कि शांतिपूर्वक करें।
- व्यर्थ अथवा फालतू के कामों में समय नष्ट करने से बचें।
- अपने व्यावसायिक/पेशेवर/कार्यालयी कार्यों के साथ-साथ स्वयं और परिवार के लिए भी सयम निकालें और इन दोनों में सामंजस्य बनाएं। इसे बिल्कुल भी नजरअंदाज न करें।
- उपलब्ध सूचना प्रौद्योगिकी का सदुपयोग करें। आज के डिजिटल युग में अनेक समय प्रबंधन उपकरण उपलब्ध हैं- जैसे मोबाइल/डिजिटल कैलेंडर, रिमाइंडर, नोट्स, या ऐप्स आदि। इनका उपयोग करके कार्यों को समय पर करना आसान हो जाता है। इसके साथ ही फेसबुक, चैटिंग और वाट्सअप जैसे अनावश्यक कार्यों में समय व्यर्थ करने से बचें।
- दूसरो को भी कार्य करने दें अर्थात् यदि कोई ऐसा कार्य है जो कम महत्वपूर्ण है और दूसरों से करा सकते हैं तो उसे आगे डेलिगेट कर दें और स्वयं महत्वूर्ण कार्य कर लें।

समय प्रबंधन कोई एक बार सीखी जाने वाली कला नहीं है, बल्कि यह निरंतर अभ्यास का विषय है। जो व्यक्ति अपने समय का सम्मान करता है, वह स्वयं का सम्मान करता है। सफलता, संतुलन और संतोष इन तीनों का आधार सही समय प्रबंधन है। इसलिए हमें सदैव "अभी करो" का सिद्धांत अपनाना चाहिए और हर क्षण को सार्थक बनाना चाहिए। इस प्रकार समय प्रबंधन के महत्व को समझकर अपने जीवन में इसे अपनाएं और सफल एवं सुखमय जीवन यापन करें।

हॉस्टल बिल्डिंग

शिवम् पांडे,
साइट अभियंता (सिविल),
एन पी पी सी लिमिटेड

जी + तीन मंजिल का कद मेरा 240 बेड और गालियारे हैं।
प्रबलित कंक्रीट की छतें पड़ेगी और ईंटो की दीवारे हैं।
2मी ऊँची कुर्सी मेरी कांचित खिड़की और द्वारें हैं।
पेयजल अवजल के पाइप बिछेंगे सिंक टोटी और टॉयलेट हैं।
5 के. वी. का जुगनू चमके, चहूं और उजियारे हैं।
गाँव शहर का चक्कर नहीं साधन - प्रसाधन सारे हैं।
इंजीनियर मेरा काम करा, नक्शा तुझे दिखाती हूं
बिल्डिंग मेरी बन जाने दे, फिर अपना नाम बताती हूं।

रेल की खिड़की

सुबह जो उठ चले हम, नींद अभी आँखों में थी,
सवेरे की थी मीठी ठंडक और आँखों में था ख्वाब।
साथ में था छोटा सा बैग और हल्की मुस्कान,
स्टेशन पहुँचे धड़कन के संग और की सफर की शुरुवात।

सीटी बजी, इंजन दहाड़ा, यात्रा ने ली अंगड़ाई,
धुआँ उठा, पटरियाँ गाईं और ज़िन्दगी मुस्काई।
पीछे छूटा शोर नगर का, ऊँचे पक्के मकान,
शहर गया पीछे कहीं, अब दिखे खेत-खलिहाल।

कच्चे-पक्के घर दिखे, दीवारें जिनमें प्रीत,
छत पर सूखते थे कपड़े, दरवाज़े पर बंधी थी भीत।
नीम की छाया, चौपालें — सब कुछ कुछ कहता था,
गाँव की मिट्टी का सौंधापन — सीने में बहता था।

किसान हल लेकर खेतों में जीवन बोते जाते थे,
धरती माँ के आँचल में, सपने जोते जातेथे।
हल्की धूप में बहता पसीना, संघर्षों की बात,
और चेहरे पर संतोष झलकता, जैसे प्रभु का साथ।

गेंहूं के हरे-भरे खेतों से रेल सरसराती थी,
सरसों के पीले फूलों से धरती मुस्काती थी।
मिट्टी की सोंधी ख़ुशबू सांसों में समा जाती थी,
मन जैसे मिट्टी से मिलकर, गीत कोई गाती जाती थी।

शाम ढली तो रंग बदला, धूप बनी अब छाया,
सोने-सी वह किरणें बोलीं — "दिन ने ओढ़ा साया।"
खिड़की से वो दृश्य दिखा, जो आँखों में रह जाए,
मन बोले — "हर सफर यूँ ही, सौ यादें दे जाए।"

इस रेल सफ़र में देखा जो, वो चित्र नहीं मिटते,
ना भीड़ का शोर था, ना शहरों का साया।
हर पेड़, हर खेत, हर पगडंडी कुछ कहती जाती थी,
और भारत का दिल धड़कता था हर रेल की खिड़की के पास।

अमित कुमार
प्रबंधक (मा.सं.)/राजभाषा अधिकारी
राइट्स, उत्तरी क्षेत्र परियोजना कार्यालय, गुरुग्राम

पूछ रहे है सवालः क्रांतिकारी

जाग उठे है भारत के लाल, पूछ रहे हैं अब ये सवाल
क्या ऐसे भारत के खातिर हमने प्राण गंवाया था।

जिसमें न है देश की ममता और न है संस्कार
क्या तुम लोगो ने आज ऐसा भारत बनाया है।

जाग उठे है भारत के लाल पूछ रहे है अब ये सवाल
कुछ इंसानो ने पहन ली है अब भेड़िए की खाल

जाग उठे है भारत के लाल पूछ रहे हैं अब ये सवाल
राजनेता है मालामाल आम जनता अब है कंगाल

जाग उठे हैं भारत के लाल पूछ रहे हैं अब ये सवाल
विकास के काम में बँट रही कमीशन की हिस्सेदारी

स्वच्छ और सुंदर देश बनाने की हैं किसकी जिम्मेदारी....
क्या फिर से जन्म लेंगे हम क्रांतिकारी?
जाग उठे हैं भारत के लाल पूछ रहे हैं अब ये सवाल...

विमल कुमार
तकनीशियन (अनु.एवं वि.)
इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड, गुरुग्राम

"ए आई का उदय और वैश्विक सुरक्षा पर इसका प्रभाव"

ए आई कम्यूटर विज्ञान की वह शाखा है जो कम्यूटर को इंसान की तरह सोचने समझने, सीखने, व्यवहार करने व समस्याओं का हल निकालना बताती है। जॉन मैकार्थी इसे जनक माने जाते है। सन् 1950 के दशक में इस प्रौद्योगिकी का उदय हुआ और 1970 के दशक में इस प्रौद्योगिकी ने जोर पकड़ी। जापान में 1970 के दशक में ए आई का उपयोग एवं प्रयोग में बढ़ोत्तरी आयी एव तत्पश्चात पूरे दुनिया में इसका विस्तार हुआ। भारत में वित्तीय वर्ष 2018-19 के बजट भाषण के दौरान वित्त मंत्री ने राष्ट्रीय कृत्रिम बुद्धिमता (AI) प्रोग्राम की घोषणा की जिसके उपरान्त देश में ए आई के रूप में अभूतपूर्व विकास हुआ है।

वर्तमान में देश या यूँ कहे दुनिया में कोई भी सेक्टर कृत्रिम बुद्धिमत्ता से अहूता नही है तथा उस सेक्टर के विकास में ए आई का महत्वपूर्ण योगदान है। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने इंसानो की जिन्दगी बदल दी है और इंसान अपने दैनिक जीवन में इसका भरपूर प्रयोग कर रहा है। देश व दुनिया में ए आई का डाटा विश्लेषण, कम्प्यूटर प्रोग्राम, कृषि, शिक्षा एव प्रशिसण चिकित्सा, यातायात, उद्योग, सेवा क्षेत्र, भाषा प्रसंस्करण, स्पीच रिकगनीशन, इमेज व वीडियो प्रासेसिंग, अन्तरिक्ष, सामरिक सुरक्षा नीति निर्माण, सतत विकास आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान है। ये कहा जा सकता है कि ए आई ने मानव जगत पर अपनी गहरी छाप छोड़ीं है और वैज्ञानिकों का दावा है कि 2045 तक यह मनुष्यो से तेज सोच, समझ और कार्य कर सकेगा। यदि ऐसा हुआ तो मानव विकास का पथ सदा के लिए बदल जायेगा, जिसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनो प्रभाव होंगा।

ए आई ने जहॉ हमारे जीवन में बहुत सारे सकारात्मक बदलाव कियें है व हमारे दैनिक क्रिया कलापों को सुगम बनाया है वही इसके कई नकारात्मक और भारी दुष्परिणाम भी सामने आ रहे हैं।

लोगो को आशंका है कि ए आई से उनकी निजता का हनन हो सकता है और ऐसा हो भी रहा है। इसकी डीपफेक प्रौद्योगिकी ने सच और झूठ में फर्क मुश्किल कर दिया है। ए आई का प्रयोग करके व्यक्ति आसानी से विविध प्रकार की सूचनाएँ एकत्रित कर सकता है और उसका दुरूपयोग भी कर सकता है। ए आई द्वारा साइबर सुरक्षा को बहुत खतरा उत्पन्न हुआ है और डिजिटल सेवाऐं व्यापक रूप से बाधित हो सकती है। लोगो को यह भी आशंका है कि भविष्य में ए आई लोगो का रोजगार छीन लेगा जिसका व्यापक प्रभाव बैकिंग, कला, शिक्षण-प्रशिक्षण, शोध व अन्य सेवा क्षेत्र पर पड़ने वाला है। ए आई का प्रयोग करके क्षण भर में अपार सूचनाएँ और उनका विश्लेषण करके आतंकी और अराजक तत्वो द्वारा देश में अस्थिरता लायी जा सकती है, अफवाहें फैलाई जा सकती हैं जिससे शांति व सामाजिक सूरक्षा भंग हो सकती है। इस प्रकार ए आई के कई नकारात्मक और दुष्परिणाम भी दिख रहे हैं इसलिए कृत्रिम बूद्धिमत्ता (AI) पर विनिमय व व्यापक नीतियों की आवश्यकता है जिससे इसका उपयोग जीवन को सरल और समृद्ध बनाने में हो सके और ए आई के विध्वंसकारी उपयोग रोका जा सके।

ए आई का सामरिक क्षेत्र में बहुतायत से उपयोग हो रहा है जिससे स्वायत्त और घातक हथियार बनाये गये है। सैन्य क्षेत्र मे सैटेलाइट द्वारा डाटा संग्रहण, उनका विश्लेषण और विश्लेषण के आधार पर फौरन निर्णय और त्वरित कार्यवाही में ए आई का महत्वपूर्ण योगदान है। ए आई का प्रयोग करके स्वायत्त घातक हथियार ड्रोन व जहाज बने हैं जो क्षण भर में प्रलय लाने में सक्षम है। सैन्य कार्यवाही के दौरान ए आई द्वारा तुरन्त निर्णय लेने में आसानी हुई है परन्तु यदि डाटा का अभाव हो तो ए आई गलत निर्णय का अनुमोदन कर सकता है जिसका खमियाजा मानव जगत को भुगतना पड़ सकता है। ए आई नीति गत निर्णय लेने मे सक्षम नहीं है और युद्ध के दौरान असैन्य क्षेत्रों में भी नुकसान हो सकता है। ए आई का प्रयोग करके सैन्य रोबोट बनाए जा रहे है जिनके प्रयोग से महज कुछ देशों मे शक्ति का केन्द्रीयकरण हो सकता है और इससे एक वैश्विक खतरा उत्पन्न हो सकता है, किसी भी देश में शांति और सुरक्षा भंग हो सकती है।

दुश्मन देश ए आई का उपयोग करके महत्वपूर्ण और संवेदनशील सूचनाओं को लीक कर सकते है तथा उन सूचनाओं का उपयोग करके देश में अस्थिरता और अराजकता की स्थिति उत्पन्न कर सकते है। इसमें महिलाएँ, बच्चे व बुजुर्ग काफी प्रभावित व उनको हानि पहुँच सकती है।

वर्तमान में युद्ध का दौर है तथा ताकतवर देश छोटे-छोटे देशों को अपनी बात मानने के लिए मजबूर करते हैं। यदि कम शक्तिशाली देश अपनी संप्रभुता अक्षुण्ण बनाने की कोशिश करे तो दुश्मन देश ए आई के माध्यम से खुफिया जानकारी हासिल करके वहाँ अस्थिरता पैदा करते हैं। फिलहाल में श्रीलंका, बांग्लादेश, नेपाल आदि देशों में अस्थिरता और अराजकता देखने को मिली हैं। वहाँ सरकारे गिर गयी और सैकड़ो लोग मारे गये। कहीं न कहीं इन सब में ए आई प्रौद्योगिकी का नकारात्मक प्रयोग हुआ और जिसका दुष्परिणाम सामने है।

ए आई का प्रयोग साइबर हमलो में हो रहा है जिससे खुफिया जानकारी, व अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज हासिल कर लिये जाते हैं। उन्हें दुष्प्रचारित करके दुश्मन देश किसी भी देश में अस्थिरता और संघर्ष की स्थिति ला सकते हैं। ए आई के बहुतायत प्रयोग से एक तरफ जहाँ सकारत्मक बदलाव हुए हैं वहीं दूसरी तरफ वैश्विक सुरक्षा खतरे में पड़ गयी है।

निष्कर्ष:- ए आई का यदि केवल सकारात्मक प्रयोग व उपयोग किया जाये तो यह एक वरदान साबित होगी। नेचर पत्रिका में प्रकाशित एक रिर्पोट के अनुसार ए आई का उपयोग करके सतत विकास हासिल करने में 85 फीसदी मद्दगार हो सकती है वहाँ यह आशंका भी है कि इसके नकारात्मक उपयोग से सतत विकास के लक्ष्यों को 35 फीसदी तक रोका भी जा सकता है।

रवि प्रकाश गुप्ता
वरिष्ठ अभियंता (सी एम यू - 2)
वाप्कोस लिमिटेड

मधुबनी कला-एक पारंपरिक लोकचित्र शैली

मधुबनी कला जिसे मिथिला चित्रकला भी कहा जाता है, भारत के बिहार राज्य के मिथिला क्षेत्र की एक प्राचीन और समृद्ध लोक कला शैली है। यह कला मुख्यतः महिलाओं द्वारा की जाती है और इसकी पहचान इसके चटकीले रंगों, गहरे काले बॉर्डर, और सूक्ष्म डिजाइनों से होती है।

प्राचीन समय में यह चित्रकला घरों की दीवारों और आंगनों पर त्योहारों, शादी-ब्याह तथा धार्मिक अवसरों पर बनाई जाती थी। आज यह कला कागज, कैनवास और कपड़े पर भी की जाती है और इसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराहना मिली है।

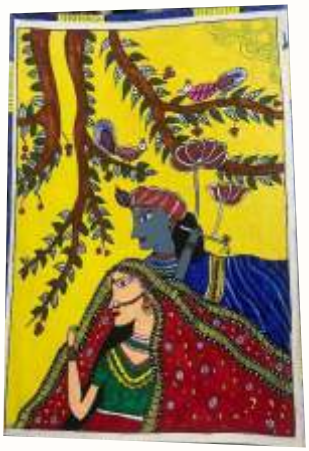

सत्यम तिवारी
साइट इंजिनियर(सिविल),
एन पी पी सी लिमिटेड

राजभाषा नियम/The Official Language Rule, 1976

नियम/Rule 8

कोई कर्मचारी किसी फाइल पर टिप्पण या कार्यवृत हिन्दी या अंग्रेजी में लिख सकता है ओर उससे यह अपेक्षा नहीं की जाएगी कि वह उसका अनुवाद दूसरी भाषा में प्रस्तुत करे। केन्द्रीय सरकार का कोई भी कर्मचारी, जो हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान रखता है, हिन्दी में किसी दस्तावेज के अंग्रेजी अनुवाद की मांग तभी कर सकता है, जब वह दस्तावेज विधिक या तकनीकी प्रकृति का हो, अन्यथा नहीं। An employee may record a note or minute on a file in Hindi or in English without being himself required to furnish a translation thereof in the other language. No Central Government employee possessing a working knowledge of Hindi may ask for an English translation of any document in Hindi except in the case of documents of legal or technical nature.

नियम/Rule 12

राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार, सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का उत्तरदायित्व है कि वह यह सुनिश्चित करे कि राजभाषा अधिनियम और नियमों के उपबंधों और केन्द्रीय सरकार द्वारा इस बारे में जारी किए गए निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है। उसकी यह भी जिम्मेदारी है कि वह इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के वास्ते उपाय करें। As per Rule of 12 of Official Language Rule, 1976 It shall be the responsibility of the administrative Head of each Central Government office to ensure that the provisions of the Act and these rules and directions are properly complied. He shall also be responsible to devise suitable and effective check-point for this purpose.

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप समिति द्वारा नराकास गुरूग्राम के कुछ सदस्य कार्यालयों के साथ विचार-विमर्श कार्यक्रम की झलकियां

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), गुरुग्राम

अध्यक्षीय कार्यालय : वाप्कोस लिमिटेड

76 - सी, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर - 18, गुरुग्राम - 122 015 (हरियाणा)